मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

ख़ुदा के साथ संबंध

"एक चीज़ जो बदलाव योग्य नहीं है वह इस उम्मत का ख़ुदा के साथ संबंध है, इस उम्मत का शरीअत से संबंध है। विजयी हो तब भी रोज़ा रखेगी, पराजित हो तब भी रोज़ा रखेगी, अल्पसंख्यक हो तब भी रोज़ा रखेगी, बहुसंख्यक हो तब भी रोज़ा रखेगी और अगर उसको जीत मिलेगी तो इसी नमाज़, रोज़े के रास्ते से मिलेगी और अगर अपमान उसका मुक़द्दर होगा तो इसमें कोताही करने की वजह से होगा। इसका संबंध ख़ुदा के साथ हमेशा बना रहेगा। इसका संबंध अपनी शरीअत के साथ शास्वत रहेगा।"

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह0)

MAR - APR
19

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

शौक़-ए-आख़िरत

ज़मीन में मोमिन की महबूबियत

''अता ख़ुरासानी से रिवायत है कि जो शख़्स ज़मीन के किसी टुकड़े पर भी सज्दा करता है वह टुकड़ा क़यामत के दिन उसके हक़ में गवाही देगा। और वह टुकड़ा उसकी मौत के दिन उस पर रोता है।''

अल्लाह तआला का ताल्लुक़ अपने हर बन्दे मोमिन से कितना ज़िन्दा और जानदार होता है कि आज सज्दा कीजिए और कल देख लीजिए कि ज़मीन का हर–हर चप्पा जिस पर आपने कभी भी अल्लाह के लिये सर टेका है आपके हक़ में गवाह बनकर आयेगा। और इस दुनिया में भी जिस वक़्त आपसे रुकू व सज्दों की ताक़त हमेशा के लिये छीन ली जाती है वह बेहिस टुकड़ा ज़मीन का नहीं रहता बल्कि सज्दा गुज़ार मोमिन के ग़म में रोता है। क्या अजब कि हर सज्दा–ए–ज़मीन सज्दे को नई ज़िन्दगी बख़्शता हो।हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० सहाबी से रिवायत है कि ''ज़मीन मोमिन के मरने पर चालिस दिन तक रोती रहती है।''

बन्द–ए–मोमिन पर इकराम व नवाज़िश की कोई हद व इन्तिहा नहीं है। ज़मीन बज़ाहिर हर तरह मुर्दा व बेजान ख़ुश्क व जामिद व बेहिस भी मोमिन की मौत पर रंज व ग़म महसूस करती है और चालिस दिन तक इस पर रोती रहती है।

अकबर इस फ़ितरते ख़ामोश को बेहिस न समझ नूरे बसीरत से तही दीदा नरगिस न समझ

''हज़रत अली रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर स०अ० ने फ़रमाया कि जो मौत से पहले आख़िरी कलाम फ़रमाया वह यह था कि नमाज़ की पाबन्दी करो, नमाज़ का पूरा एहतिमाम करो और अपने ग़ुलामों, अधीनों के बारे में ख़ुदा से डरो।''

इस हदीस से मालूम हुआ कि इस दुनिया से और उम्मत से हमेशा के लिये रुख़्सत होते हुए रसूलुल्लाह स०अ० ने अपनी उम्मत को ख़ास तौर पर दो बातों की ताकीदी नसीहत फ़रमायी थी एक यह कि नमाज़ का पूरा एहतिमाम किया जाए, इसमें ग़फ़लत और कोताही न हो। यह सबसे अहम फ़रीज़ा और बन्दों पर अल्लाह का सबसे बड़ा हक़ है।

दूसरी यह कि ग़ुलामों–बांदियों के साथ बर्ताव में उस अल्लाह तआला से डरा जाए जिसकी अदालत में हर एक की पेशी होगी और हर मज़लूम को ज़ालिम से बदला दिलवाया जायेगा। ग़ुलामों, ज़ेरदस्तों के लिये यह बात कितनी बड़ी है कि रसूले रहमत स०अ० ने इस दुनिया से जाते वक़्त सबसे आख़िरी वसीयत अल्लाह तआला के हक़ की अदायगी और उनके साथ हुस्ने सुलूक (अच्छे बर्ताव) की फ़रमायी और इस हदीस के मुताबिक़ सबसे आख़िरी लफ़्ज़ जो आप स०अ० की ज़बान से अदा हुआ:

''वत्तकुल्लाहा फ़ी मा मलकत ईमानकुम'' था।

इब्ने उमर सहाबी से रिवायत है कि नबी करीम स०अ० ने फ़रमाया कि मोमिन जब मरता है तो तमाम मवाक़े क़ब्र उसके मरते ही अपनी आराइश करते हैं और कोई हिस्सा उनका ऐसा नहीं जो उसकी तमन्ना न करता हो कि वह इसमें मदफ़ून हो।

लीजिए क़ब्र के नाम से वहशत और इसके तसव्वुर से दहशत कैसी? मोमिन की वफ़ात पर तो हर क़ब्र इसकी तमन्ना ही में है कि इस मोमिन का लाशा वहीं से उठे और इसमें दफ़न हो। जन्नत की नौबत तो बाद में आयेगी, पहले क़ब्र ही उसके इस्तिक़बाल के लिये अपने आप को पेश करती है।

जैसे किसी मुअज़्ज़ज़ मेहमान का इस्तिक़बाल किया जाता हैं और अपनी ज़ेब व ज़ीनत इसके लुभाने की ख़ातिर करती रहती है। ख़ूशक़िस्मत बन्दा–ए–मोमिन।

मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी (रह०)

بسم الله الرحمن الرحيم

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक:३-४ मार्च - अप्रैल २०१९ ई० वर्ष:११

संरक्षक

हज़रत मौलाना
सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी
(अध्यक्ष - दारे अरफ़ात)

सम्पादक

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

सम्पादकीय मण्डल

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी
अब्दुस्सुबहान नाख़ुदा नदवी
महमूद हसन हसनी नदवी

सह सम्पादक

मो० नफ़ीस ख़ाँ नदवी

अनुवादक

मोहम्मद सैफ़

मुद्रक

मो० हसन नदवी

इस अंक में:

इस्लामोफ़ोबिया.....२
मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

हृदय परिवर्तन के बिना जीवन परिवर्तन संभव नहीं.....४
हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह०

नारी और इस्लाम.....६
असरारुल हक़ क़ासमी रह०

मीडिया तथा मुसलमान.....८
मौलाना ख़ालिद सैफ़ुल्लाह रहमानी

एक फ़रिश्ता सिफ़त इन्सान का इन्तिक़ाल.....१०
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

आइना-ए-ज़ात व सिफ़ात.....१२
अब्दुस्सुब्हान नाख़ुदा नदवी

मिश्रित शिक्षा व्यवस्था.....१५
सैयद आसिफ़ मिल्ली नदवी

हिन्दु मुस्लिम संबंध तथा अतिराष्ट्रवाद.....१७
डॉक्टर एहसानुल्लाह फ़हद

दम तोड़ता लोकतन्त्र.....२४
मौताना मुहम्मद आज़म

नुबूव्वत के बाद रसूलुल्लाह (स०अ०) की आमदनी.....२६
मुहम्मद अरमुग़ान नदवी

वैश्विक आतंकवाद.....२८
जनाब संदीप तिवारी

E-Mail: markazulimam@gmail.com www.abulhasanalinadwi.org

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल-नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली,यू०पी०.229001

प्रति अंक १०रू

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला खाँ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण,मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल-नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

वार्षिक १००रू०

Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi Samiti (Punjab National Bank) A/c No. 6127002100000339 (IFSC: PUNB0612700)

सम्पादकीय

इस्लामोफ़ोबिया

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

किसी शक्तिशाली वस्तु से डरना मनुष्य की स्वाभाविक कमज़ोरी है। किन्तु यह कमज़ोरी भर्त्सना व टिप्पणी योग्य नहीं है और न ही चिन्ताजनक है। लेकिन जब यह डर हर से ज़्यादा बढ़ जाये और हृदय व मस्तिष्क को प्रभावित करने लगे और फिर इस हावी हुए डर का कोई तर्क भी न हो तो फिर यह स्थिति "फ़ोबिया" कहलाती है। पश्चिमी चिन्तक इस्लाम को एक बहुत ही शक्तिशाली, प्रभावपूर्ण और क्रान्तिकारी धर्म स्वीकार करते हैं। इसीलिए वे इस्लाम के बढ़ते फैलाव को लेकर दिमाग़ी रूप अत्यन्त भयभीत हैं और भय की ऐसी ही स्थिति को "इस्लामोफ़ोबिया" का नाम दिया जाता है।

यूरोप व अमरीका ने हमेशा से मुसलमानों को अपना राजनीतिक, धार्मिक व सांस्कृतिक शत्रु समझा है। क्योंकि केवल इस्लाम ही वह धर्म है जो उन्हें प्रत्यक्ष रुप से चैलेंज करता है और पश्चिम की तुलना में यही वह विशेष धर्म है जिसके अन्दर पूरी दुनिया को अपनी छत्रछाया में लेने की योग्यता है। यही कारण है कि यूरोप में मुसलमानों की बढ़ती हुई संख्या से पश्चिमी चिन्तक हमेशा चिन्तित रहते हैं। उन्होंने इसको फैलाव व प्रभाव को रोकने के हर संभव प्रयास भी किये लेकिन यह भी एक वास्तविकता है कि इस्लाम का जितना दुष्प्रचार किया गया इस्लाम का क्षेत्र उतना ही फैलता गया। लोगो ने इसमें रुचि ली। इसे चर्चा का विषय बनाया। इसका अध्ययन किया और फिर इस्लाम से प्रभावित होकर इस्लाम को स्वीकार कर लिया।

पश्चिम व इस्लाम के संघर्ष का इतिहास बहुत ही पुराना है। फिर भी इस संघर्ष में सलीबी जंगों के बाद और तीव्रता पैदा हो गयी, जो क्लीसा और राजनेताओं व शासकों की ओर से मुसलमानों पर थोपी गयी थी। उन युद्धों का उद्देश्य राजनीतिक व आर्थिक लाभ की प्राप्ति था जिसमें उन्होंने अपनी जनता को भी सम्मिलित किया। उसे धार्मिक रंग में यहां तक रंग दिया कि उसमें शामिल होने वाले की मुक्ति की घोषणा कर दी गयी। लेकिन मुसलमानों के ईमानी जज़्बे, चरित्र की शक्ति व सैन्य चतुराई के कारण यूरोप को लगातार पराजय का सामना करना पड़ा था।

सलीबी युद्धों ने पूरी ईसाई दुनिया को अत्यन्त भयभीत कर दिया। आकर्षण की यह स्थिति थी कि उन्होंने अरबी भाषा व अरबी हाव–भाव को पूरी तरह से अपना लिया था। लेकिन पश्चिमी चिन्तकों और नेतृत्वकर्ताओं ने उन जंगो में अपनी पराजय को बहुत ही गंभीरता से लिया। पराजित होने के कारणों व मुसलमानों की सफलता के कारणों का निरीक्षण किया और फिर अपनी युद्ध की कार्यप्रणाली को पूरी तरह से बदल कर अपनी सारी क्षमता मुसलमानों के विरुद्ध एक नये मोर्चे की स्थापना में लगा दी। जिसका केन्द्र शैक्षिक, वैचारिक, राजनीतिक व आर्थिक व्यवस्था पर आधारित था और जिसका उद्देश्य मुस्लिम शासको को आपस में लड़ाकर कमज़ोर करना था जिसके लिये उन्होंने हर दांव–पेच अपना रखा था। यह मानो यूरोप की उन्नति का आरम्भ बिन्दु था।

मुस्लिम राष्ट्र यूरोपीय षडयन्त्र का पूरी तरह से शिकार हुए। राजतन्त्र को दृढ़ करने के बजाए अनावश्यक समस्याओं में उलझकर आपसी झगड़ों में पड़ गये। परिणामस्वरूप गृहयुद्ध की नौबत आ गयी। फिर धीरे–धीरे उन शासनो की एकता चूर–चूर हुई और अन्त में उनका चिराग़ ही बुझ गया।

सोलहवीं सदी के बाद यूरोप ने अपनी राजनीतिक व आर्थिक उन्नति की ओर अग्रसर होना आरम्भ किया। पश्चिमी राष्ट्र यानि हस्पानिया, बर्तानिया, फ़्रांस, पुर्तगाल और रूस व अमरीका इत्यादि ने मुस्लिम देशों पर क़ब्ज़ा करके वहां के लोगों को अपना दास बना लिया। राष्ट्रीय सम्पत्ति को जी भर कर लूटा। विरोध करने वालों को मौत

के घाट उतार दिया और बरबरता की ऐसी कार्यवाहियां की जिनके उदाहरण इतिहास में नहीं मिलते। यूरोपीय साम्राज्य का यह इतिहास पूरी मानवता पर धब्बा है।

बीसवीं सदी में पश्चिमी नवीनीकरण के अत्याचारों से तंग आकर जनता ने विद्रोह आरम्भ कर दिया। विशेषतयः उलेमाओ (बुद्धिजीवियों) ने संघर्ष किया और मुसलमानों के सभ्यता व संस्कृति को सुरक्षित रखा। क्रान्तियों की उन आंधियों के सामने पश्चिमी ताक़तों के पांव उखड़ गये और उनको मुस्लिम देशों से निकलना पड़ा। लेकिन जाते–जाते अपने पीछे वे शासक वर्ग के नाम पर कठपुतलियां छोड़ गये। यह शासक देश की दौलत व सम्पत्ति पर क़ाबिज़ हो गये और स्वतन्त्रता के फल से जनता को वंचित कर दिया। अतः आम जनता शिक्षा व प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिये पश्चिमी देशों का रुख़ करने लगी जहां विभिन्न प्रकार के कार्यों हेतु लोगों की आवश्यकता थी। इस प्रकार बीसवीं सदी में लाखों मुसलमान फ़्रांस, बर्तानिया, अमरीका, जर्मनी, इटली, हॉलैन्ड, स्पेन, आस्ट्रिया, डेनमार्क और नार्वे इत्यादि पहुंचे और नौकरियां करते–करते वहीं के निवासी हो गये। उन लाखों मुसलमानों में से एक बहुत बड़ी संख्यां उनकी भी थी जो पश्चिमी सभ्यता व संस्कृति में घिरे हुए होने के बावजूद इस्लामी मूल्यों से पूरी तरह जुड़े हुए थे और अपनी जातिगत विशेषता पर स्थापित रहे। इसके अलावा दावत व तब्लीग़ (धार्मिक प्रचार–प्रसार) के द्वारा इस्लाम के प्रचार–प्रसार का कार्य भी आरम्भ हुआ। धीरे–धीरे मुसलमानों की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि होती गयी। व्यापार व नौकरी में भी उनका प्रतिनिधित्व महसूस किया जाने लगा। फलते–फूलते मुसलमानों को बर्दाश्त करना पश्चिम के लिये आसान बात न थी। अतः मुसलमानों के विरोध का आरम्भ हुआ। बहुत से महत्वपूर्ण देश जैसे बर्तानिया, जर्मनी और फ़्रांस इत्यादि में पश्चिमी मार्गदर्शक यह कहने लगे कि मुसलमान पलायन करके आयी हुई क़ौम है और यह लोग हमारे नवजवानों से नौकरियां छीन कर उन्हें बेरोज़गारी के दलदल में ढ़केल रहे हैं। अतः देश में उनके आने पर पाबन्दी लगायी जाये। बहुत से पश्चिमी मार्गदर्शकों ने यह एतराज़ भी किया कि मुसलमान पक्षपाती हैं और देश के प्रति वफ़ादार नहीं है क्योंकि मुसलमान हमारे मूल्यों व रस्मों को अपनाने के बजाए अपने धार्मिक रीति–रिवाज के पाबन्द हैं और समाज में अपनी अलग पहचान रखते हैं जो पश्चिमी समाज के बिल्कुल विपरीत है।

उपरोक्त कारणों के आधार पर पश्चिमी देशों में मुसलमानों को संदेह की दृष्टि से देखा जाने लगा। उनका अपमान किया जाने लगा। उनके साथ मुजरिमों जैसा बर्ताव किया जाने लगा और विभिन्न विभागों में वे पक्षपात का निशाना बनने लगे। फिर भी सोवियत यूनियन के पतन तक मुसलमानों से दुश्मनी में इतनी कट्टरता नहीं पैदा हुई थी क्योंकि उस समय तक पूरा यूरोप कम्यूनिज़्म (साम्यवाद) से युद्ध में व्यस्त था और कम्यूनिज़्म को पराजित करने में ही उसकी सारी क्षमता लग रही थी।

सोवियत संघ की समाप्ति के बाद यूरोप ने पश्चिमी देशों में इस्लाम के बढ़ते हुए प्रभाव को अपनी धार्मिक व राजनीतिक चौधराहट के लिये ख़तरा समझा। अतः विभिन्न क्षेत्रों में उन्होंने मुसलमानों के ख़िलाफ़ मोर्चे खोल दिये। मीडिया व साहित्य के द्वारा भी मुसलमानों को डराया जाने लगा। हिंसात्मक घटनाएं भी होने लगीं और फिर नाइन–इलेवेन का ड्रामा रचा गया। जिसके परिणामस्वरूप पश्चिमी क़ौमें "इस्लामोफ़ोबिया" नामक बीमारी का शिकार होती चली गयीं।

नाइन–इलेवेन के ड्रामे के बाद धार्मिक आधार पर मुसलमानों के साथ पक्षपातपूर्ण बर्ताव किया गया। पर्दे पर पाबन्दी की आवाज़ें उठने लगीं। कुरआन के नुस्ख़े जलाये गये। अन्तिम संदेष्टा रसूलुल्लाह (स0अ0) की शान में गुस्ताख़ी की गयी और फिर हिंसात्मक घटनाओं का एक सिलसिला चल पड़ा जिसमें बड़ी संख्या में बेगुनाह मारे गये। इज़्ज़ते लूटी गयीं। लोग ज़िन्दा जलाये गये। दुकान व मकान लूटे गये और पूरी दुनिया के सामने इस्लाम को एक आतंकप्रिय धर्म के रूप में प्रस्तुत किया गया। और यह सारी हैवानियत केवल इसलिये की गयी कि यूरोप व अमरीका में इस्लाम के बढ़ते हुए क़दम रुक जाएं और लोग उसका देश निकाला कर दें लेकिन..... (शेष पेज 16 पर)

हृदय परिवर्तन के बिना जीवन परिवर्तन संभव नहीं

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०)

दोस्तो! मानवीय समस्याओं और मुश्किलों का हल न लिबास की समानता है, न ज़बान और तहज़ीब का मेल–जोल, न मुल्क व वतन की एकता, न इल्म व दौलत, न सभ्यता व संस्था, न साधनों व ज़रियों की अधिकता, इन सब में कोई एक भी ऐसी ताक़त नहीं जो दुनिया को बदल दे, जब तक दिल की दुनिया नहीं बदलती बाहर की दुनिया नहीं बदल सकती। पूरी दुनिया की बागडोर दिल के हाथ है, ज़िन्दगी का सारा बिगाड़ दिल के बिगाड़ से शुरू हुआ है, लोग कहते हैं कि मछली सर की तरफ़ से सड़ना शुरू होती है। मैं कहता हूं कि इन्सान दिल की तरफ़ से सड़ता है। यहां से बिगाड़ शुरू होता है और सारी ज़िन्दगी में फैल जाता है।

पैग़म्बर इन्सानियत का मिज़ाज बदलते हैं:

पैग़म्बर यहीं से अपना काम शुरू करते हैं। वह ख़ूब समझते हैं कि यह सब दिल का कुसूर है। इन्सान का दिल बिगड़ गया है। उसके अन्दर चोरी, ज़ुल्म, दग़ाबाज़ी का जज़्बा और हवस पैदा हो गयी है। उसके अन्दर इच्छाओं का तूफ़ान उमड़ रहा है जो हर वक़्त उसको नचा रहा है और वह बच्चे की तरह उसके इशारों पर नाच रहा है। पैग़म्बर कहते हैं कि सारी ख़राबियों की जड़ यह है कि इन्सान पापी हो गया है। उसके अन्दर बुराई का जज़्बा और उसका ज़बरदस्त रूझान पैदा हो गया है। इसलिए सबसे ज़रूरी और महत्वपूर्ण काम यह है कि उसके दिल का इलाज किया जाए और उसके मन को साफ़ किया जाए।

वह लोगों को फ़ाक़ा करते देखते हैं। इस मंज़र से उनका दिल जिस क़द्र दुखता है दुनिया में किसी का नहीं दुखता। उनको खाना–पीना मुश्किल हो जाता है। मगर वह हक़ीक़त पसंद होते हैं। वह यह नहीं करते कि उसी को मसला बनाकर उसके पीछे पड़ जाएं। इसलिए कि वह जानते हैं कि यह ख़राबी का नतीजा है, ख़राबी की जड़ नहीं। वह जानते हैं कि अगर लोगों के पेट भरने का सामान कर दिया जाए और ज़ादा ग़ल्ला लेकर भूखों को दे दिया जाए तो यह एक वक़्ती और सतही इन्तिज़ाम होगा। वह ऐसा वातावरण और ऐसे हालात पैदा करते हैं कि लोगों से दूसरों की भूख न देखी जा सके और ख़ुद अपने घर से ग़ल्ला लाकर लोगों के पास डाल जाएं।

इसके विपरीत लोग ऐसे हालात पैदा करते जाते हैं कि ग़ल्ला खिसकता और एक जगह जमा होता चला जाए। याद रखिए कि अगर सोच में बदलाव नहीं हुआ और ग़ल्ले का बंटवारा या रसद का इन्तिज़ाम कर दिया गया तो इसके बाद भी लोगों को ऐसा फ़न मालूम है कि दूसरों की झोली के दाने उनकी झोली में आ जाए और दौलत हर तरफ़ से सिमट कर उनके क़दमों में लग जाए। आपने शायद 'अलिफ़ लैला' का क़िस्सा पढ़ा हो कि सिंधबाद जहाज़ी अपने एक सफ़र में एक जगह पर पहुंचा उसने देखा कि जहाज़ का कप्तान बहुत फ़िक्रमन्द और ग़मग़ीन है। सिंधबाद ने वजह पूछी तो जहाज़ के चालक ने बतलाया कि हम ग़लती से एक ऐसी जगह पर आ गए हैं कि जहां से क़रीब मैग्नेट का एक पहाड़ है। अभी थोड़ी देर में हमारा जहाज़ उसके क़रीब पहुंच जाएगा। मैग्नेट लोहे को खींचता है। जब वह पहाड़ हरकत करेगा तो जहाज़ की सब कीलें और तख़्तों के क़ब्ज़े निकलकर पहाड़ से जा मिलेंगे और जहाज़ का बन्द–बन्द अलग हो जाएगा। उस वक़्त हमारा जहाज़ डूबने से न बच

सकेगा। अतः ऐसा ही हुआ, मैग्नेट ने लोहे को खींचना शुरू कि और जहाज़ में जितना भी लोहे का सामान था सब खिंच–खिंच कर पहाड़ पर पहुंच गया और देखते–देखते जहाज़ डूब गया। ख़ुश क़िस्मत सिंधबाद एक बहते हुए तख़्ते के सहारे किसी जज़ीरे (टापू) पर पहुंच गया और उसकी जान बच गयी।

यह क़िस्सा ग़लत हो या सही इससे मुझे कोई सरोकार नहीं, मगर मुझे आपको यह सुनाना था कि हमारी सोसाइटी में भी चुम्बकीय गुणों वाले पूंजीपति और व्यापारी मौजूद हैं। उन्हें आप भी मैग्नेट कहते हैं। वह ऐसी साज़िश करते हैं कि दौलत सिमटकर उनके घर में आ जाती है। वह ऐसा आर्थिक जाल फैलाते हैं कि लोग चार व नाचार सबकुछ उनकी झोली में डाल देते हैं और अपने जीवन यापन के साधन और ज़रूरतें उनके सुपुर्द करके फिर ग़रीबी और भुखमरी की ज़िन्दगी गुज़ारने लगते हैं। पैग़म्बर दिल की हालत बदल देते हैं। वह इन्सान के अन्दर ऐसी तब्दीली पैदा करते हैं कि वह दूसरे इन्सान की भूख को देख न सके। वह उसके अन्दर त्याग और क़ुर्बानी का जज़्बा और सच्ची इन्सानी हमदर्दी पैदा करते हैं। उनको दूसरों की ज़िन्दगी अपनी ज़िन्दगी से ज़्यादा प्यारी हो जाती है। वह अपनी जान खोकर दूसरों की ज़िन्दगी बचाना चाहता है। वह अपने बच्चों को भूखा रखकर दूसरों का पेट भरना चाहता है। वह अपने को ख़तरों में डालकर दूसरों को ख़तरों से बचाना चाहता है।

त्याग की दो घटनाएं

आप मेरे इन शब्दों पर हैरान न हों, यह सब ऐतिहासिक घटनाएं हैं। हमारी आपकी इसी दुनिया में ऐसा हो चुका है। इतिहास में ऐसी घटनाएं घटित हुई हैं जो इन फ़र्ज़ी क़िस्सों और अफ़सानों से कहीं ज़्यादा हैरतअंगेज़ और आश्चर्यजनक हैं, जो आज फिल्मों में और स्क्रीन पर दिखलाई जाती हैं।

मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (स0अ0) की दुनिया में आमद के कुछ अर्से बाद का क़िस्सा है कि एक मुसलमान अपने एक ज़ख़्मी भाई की तलाश में पानी लेकर निकले कि शायद पानी की ज़रूरत हो तो मैं उनकी ख़िदमत करूं। ज़ख़्मियों में उनको अपने भाई नज़र आ गए, जो ज़ख़्मों से निढ़ाल और प्यास से बेक़रार थे, उन्होंने प्याला भरकर पानी दिया तो ज़ख़्मी भाई ने एक दूसरे ज़ख़्मी की तरफ़ इशारा किया कि पहले इनको पिलाओ। अगर वाक़्या यहीं ख़त्म हो जाता तब भी इन्सानियत की बुलन्दी के लिए काफ़ी था और इतिहास की एक यादगार घटना होती, लेकिन वाक़्या यहीं ख़त्म नहीं होता, जब इस ज़ख़्मी के सामने प्याला पेश किया गया तो उसने तीसरे जख़्मी की तरफ़ इशारा किया। इस तरह हर जख़्मी अपने पास वाले जख़्मी की तरफ़ इशारा करता रहा, यहां तक कि प्याला चक्कर काटकर पहले ज़ख़्मी की तरफ़ पहुंचा तो वह दम तोड़ चुका था। दूसरे के पास पहुंचा तो वह भी रुख़्सत हो चुका था। इसी तरह एक के बाद यह सब जख़्मी दुनिया से चले गए लेकिन इतिहास के पन्नों पर अपनी एक छाप छोड़ गए। आज जबकि भाई–भाई का पेट काट रहा है और एक इन्सान दूसरे इन्सान के मुंह से रोटी का टुकड़ा छीन रहा है। यह घटना रोशनी का एक मीनार है।

एक बार रसूलुल्लाह (स0अ0) के पास कुछ मेहमान आए। आपके यहां कुछ खाने को नहीं था। आपने कहा कि इनको कौन अपने घर ले जाएगा। एक सहाबी हज़रत अबूतल्हा अंसारी मेहमानों को ले गए। घर मे खाना कम था। घर में मशविरा हुआ कि बच्चों को सुला दिया जाएगा और खाना मेहमानों के सामने रखकर चिराग़ बुझा दिया जाएगा। ऐसा ही हुआ, मेहमानों ने पेट भरकर खाना खाया और अबूतल्हा भूखे उठ गए। मेहमानों को अंधेरे में पता चलने नहीं पाया कि उनका मेज़बान खाने में शामिल नहीं है और वह खाली हाथ मुंह तक ले जा रहे थे।

इन्सानियत का पेड़ अन्दर से हरा–भरा होगा

बस पैग़म्बर इन्सान के अन्दर बदलाव पैदा करते हैं। वह निज़ाम बदलने (व्यवस्था परिवर्तन) की इतनी कोशिश नहीं करते हैं जितना मिज़ाज बदलने की कोशिश करते हैं।

.....(शेष पेज 7 पर)

नारी और इस्लाम

मौलाना असरारुल हक़ क़ासमी (रह०)

नारी अधिकारों के नाम पर आज जितने संगठन हैं इतिहास में इसका उदाहरण मिलना कठिन है। लेकिन यह भी सत्य है कि नारी आज सरे बाज़ार अपमानित की जा रही है। आज़ादी के नाम पर हर जगह इसका शोषण किया जा रहा है। जाहिलियत के समय की नई–नई शक्लें सामने आ रहीं है, जब इसकी हैसियत किसी पशु से अधिक नही थी। उस समय विभिन्न धर्मो व संस्कृति में उसका कोई स्थान नही था। इसाइयों ने इसको दुनियादारी की एक अलामत क़रार दे दिया था। तपस्या के दौरान अगर किसी नारी पर इनकी दृष्टि पड़ जाती थी तो समझते थे कि इनकी सारी तपस्या नष्ट हो गई। मातांए ममता को तरस गईं थी। संसार के कुछ क्षेत्रों में पति के देहान्त के पश्चात नारी का जीवन मृत्यु से बदतर होता है। इसलिए पति की चिता में सती हो जाना उत्तम समझती थी। अरबों के कुछ क़बाइली क्षेत्रों में जब कन्या जन्म लेती थी तो उसको जीवित ज़मीन में गाड़ दिया जाता था। इसी प्रकार यदि पति की मृत्यु हो जाती थी तो पत्नी को एक वर्ष के लिए किसी कोठरी में क़ैद कर दिया जाता था। संसार के विभिन्न क्षेत्रों में नारी को बहुत तुच्छ समझा जाता था। कुछ धर्मो में यह आदेश था कि माहवारी के समय इसे घर से बाहर निकाल दिया जाए। कुछ क्षेत्रों में यह रिवाज था कि पिता के मरने के उपरान्त इसकी पत्नियां बड़े लड़के के हिस्से में आ जाती थी और वह अपनी माता के अतिरिक्त पिता की समस्त पत्नियों का अधिकारी बन जाता था। सबसे पहले हमारे आख़िरी सन्देष्टा सल्ल0 ने नारी को मनुष्यता के दायरे में स्थान दिया इसके अधिकार बताए मर्दों के अधिकार से इसे मुक्त किया और इसकी शारीरिक संरचना के अनुसार इसके लिए एक व्यवस्था बनाई। इसको ज्ञान व कर्म के धन से परिपूर्ण करके ईश्वर के निकट की वह उंचाइयां दी जो बड़े–बड़े धर्म गुरुओं के निकट बड़े गर्व की बात है।

माता के पैरों के तले स्वर्ग आप सल्ल0 ने बताया, पत्नि को घर की मालिकिन व अधिकारी बताया, बेटियों के साथ प्यार मुहब्बत करने वालों और अच्छे संसकार देने वालों को स्वर्ग में अपने निकटतम होने की खुशखबरी दी। हज्जतुलविदा के आखिरी वकतव्य में आप सल्ल0 ने जिन मुख्य बातों की तरफ ध्यान आकर्षित किया उनमें मुख्यता यह फरमाया:

"औरतों के मामले में अल्लाह से डरो।"

इसमें मुख्य रूप से पत्नियों को ख़िताब करते हुए फरमाया:

"तुम ने इनको ईश्वर की अमानत की रूप में प्राप्त किया है और इनसे शारीरिक सम्बन्ध को ईश्वर की आज्ञा से जाएज़ बनाया है।"

पतियों के लिए पत्नियों को ईश्वर की अमानत क़रार देकर आप सल्ल0 ने नारी को जो सुरक्षा प्रदान की है संसार में इसका उदाहरण मिलना कठिन है। इस्लाम में अमानत की अहमियत बहुत अधिक है इसकी रक्षा हर मुसलमान का कर्तव्य है। इसका गलत प्रयोग महा पापों में से एक है। इसका विवरण आपने विभिन्न अवसरों पर बयान किया। कोई ऐसा काम जो इसके लिए बोझ बन जाए इससे आपने इसको दूर रखा। भारी ज़िम्मेदारी आपने मर्दों पर डाली और हल्के फुल्के काम औरतों के ज़िम्मे किए गये। ज्ञान में प्रगति का न केवल इसे अधिकार दिया अपितु इसे उत्तम कहा। मीरास में इसे सम्मिलित किया गया और इसकी राय को अहमियत दी गई। हर प्रकार की इसे आज़ादी दी गई लेकिन इसकी संरचना का ख्याल रखा गया। शर्म और हया को इसके सर का ताज कहा गया। हया (लज्जा) को इसका जौहर बताया गया। घर की व्यवस्था में पति के साथ एकता और इसके प्रेम व आज्ञा पालन को इसकी प्रगति की

साढ़ी बताया गया। मर्दों को यह आदेश दिया गया कि वह पत्नियों की टोह में न रहें, उनमें बुराइयां न ढूंढते फिरें अगर कोई एक बात बुरी लगी हो तो दूसरी अच्छी बातों की तरफ ध्यान दें, उनसे प्रेम का व्यवहार करें आप सल्ल0 ने फरमाया:

"तुम में सब से अच्छा वह है जो अपनी पत्नियों के लिए अच्छा हो।"

अन्तिम सीमा की बात यह बताई कि यदि तुम्हे अपनी पत्नि में कोई बुराई दिख रही हो तो उसे प्रेमपूर्वक सुधारने का प्रयत्न करो लेकिन पीछे मत पड़ जाओ तुम्हारी समाजी व्यवस्था इससे सम्बन्धित है। तुम इसे सहन करो अगर तुम इसके पीछे पड़ गये तो तुम्हारा सम्बन्ध इससे टूट जाने का भय है।

हां यदि कोई ऐसी बात हो जिससे पूरे समाज पर प्रभाव पड़ रहा हो और पारिवारिक व्यवस्था के प्रभावित होने का भय हो तो थोड़ा कठोर होने की आवश्यकता है। इरशाद होता है कि:

"इन पर तुम्हारी ज़िम्मेदारी यह है कि वह तुम्हारे बिस्तर पर किसी ऐसे को न बैठने दे जिसको तुम पसन्द न करते हो फिर यदि वह ऐसा करती है तो उनको मारो लेकिन कठोरता से नही।"

यदि वह निर्लज्जता व दुर्व्यहार में पड़ रही है तो पति की ज़िम्मेदारी है कि समझाए न माने तो सख्ती करे लेकिन सीमा में रहे फिर आगे व्यवस्था भी कर दी।

"और उनका अधिकार तुम्हारे ऊपर यह है कि सही ढ़ंग से इनके खाने व कपड़े की व्यवस्था करो।"

संसार को आज ऐसी व्यवस्था की आवश्यकता है जिसमें नारी को इसकी अपनी आवश्यकता और शारीरिक संरचना के अनुसार आज़ादी का अधिकार हो लेकिन इसे व्यवसाय की मंडी में नीलाम न किया जाए और आज़ादी के नाम पर इससे वह काम न लिए जाएं जिनसे मानवता का सर शर्म से झुक जाए। अरफात के खुत्बे में जिस तरह से नारी के विषय में मर्दों का ध्यान आकर्षित किया गया है व औरतों को भी लाज व लज्जा के साथ जीवन यापन का आदेश दिया गया है। यह नारी के सम्बन्ध में संसार के असंतुलित विचारों के लिए प्रकाश स्तम्भ है।

शेष: हृदय परिवर्तन के बिना जीवन परिवर्तन संभव नहीं

व्यवस्था सदा स्वभाव के अधीन रही है। अगर दिल नहीं बदलता, मिज़ाज़ नहीं बदलता तो कुछ नहीं बदलता। लोग कहते हैं कि दुनिया ख़राब है, ज़माना ख़राब है। मैं कहता हूं कि यह कुछ नहीं बल्कि इन्सान ख़राब है। क्या ज़मीन की हालत में फ़र्क़ पड़ गया? क्या हवा का असर बदल गया? क्या सूरज ने गर्मी और रोशनी देनी छोड़ दी? क्या आसमान की हालत बदल गयी? किसकी फ़ितरत में फ़र्क़ पड़ा? ज़मीन उसी तरह सोना उगल रही है। उसके सीने से उसी तरह अनाज के भण्डार निकल रहे हैं, फलों के ढ़ेर निकल रहे हैं लेकिन बंटवारा करने वाले पापी हो गए हैं। यह ज़ालिम जब अपनी आवश्यकताओं की सूची बनाते हैं तो अख़बारों के पन्ने उसके लिए कम और दफ़्तर के दफ़्तर उनके लिए तंग होते हैं और जब दूसरों की ज़रूरतों पर सोचते हैं तो सारा अर्थव्यवस्था की सारी योग्यता का कमाल उसको कम करने में ख़र्च कर देते हैं। जब तक यह रुझान नहीं बदलता, इन्सानियत कराहती रहेगी। पैग़म्बर दिलों में इन्जेक्शन लगाते हैं। लोग बाहर की टीप–टाप करते हैं और उस पर सारा ज़ोर सर्फ़ करते हैं। पैग़म्बर अन्दर के घुन की चिन्ता करते हैं। आज सारी दुनिया में यही हो रहा है कि मानवता के पेड़ अन्दर से सूखता चला जा रहा है। कीड़ा उसके गूदे को खाए चला जा रहा है लेकिन ज़माने के बुक़राद ऊपर से पानी छिड़कवा रहे हैं। पेड़ के अन्दर हरियाली और उसकी बढ़ोत्तरी की जो ताक़त थी वह ख़त्म हो चली है, लेकिन पत्तियों को हरा–भरा करने को हवाएं पहुंचायी जा रही हैं। पानी छिड़का जा रहा है कि सूखे पत्ते हरे हों। पैग़म्बरों ने इन्सान को इन्सान बनाने की कोशिश की। उन्होंने उसे ईमानी इन्जेक्शन दिया और कहा कि ऐ भूले हुए इन्सान, अपने पैदा करने वाले को पहचान और सोते जागते, चलते–फिरते उसे निगरां (संरक्षक) समझ, न उसे ऊंघ आती है, न उसे नींद आती है।

मीडिया तथा मुसलमान

मौलाना ख़ालिद सैफ़ुल्लाह रहमानी

रेडियो और टीवी पर प्रोग्राम के दो प्रकार इस समय प्रचलित हैं। कुछ प्रोग्राम हैं जिनको "धार्मिके प्रोग्राम" कहते है। ये लगातार होने वाले प्राग्रामों में अलग अलग संबंध से होते हैं। और कुछ ऐसे हैं जो "धार्मिक प्रचार" कहलाते हैं। ये लगातार प्रोग्राम हैं जो दीनी विषयों से संबंधित है, इनका संबंध मुस्लिम देशों से है। यूरोप के कुछ देशों में मुसलमानों ने कुछ घन्टे प्राप्त कर लिये है जिनमें वो अपने प्रोग्राम प्रस्तुत करते हैं। ऐसा यूरोप के कई देशों में हो रहा है। इसके दो प्रकार हैं। एक प्रकार तो है कि कुछ मुस्लिम व्यापारी घन्टे ख़रीद लेते हैं या जितने घन्टे प्रयोग करते उसका मूल्य चुका देते हैं। उनकी हैसियत विज्ञापन की होती है। ये प्रोग्राम इस्लाम के प्रचार का साधन बनते हैं। इसका अनुभव यूरोप के कई क्षेत्रों में हो रहा है। रेडियो के अतिरिक्त समाचार पत्रों में भी इसका अनुभव किया जाता है। जैसे वो देश ग़ैरमुस्लिम देश है तो मुसलमान को आज्ञा है कि जितने घन्टे जिस शक्ल में भी लें उनमें अपनी मर्ज़ी के प्रोग्राम प्रस्तुत करें और वो प्रोग्राम इतने प्रभावित होते हैं कि कुछ लोग उन प्रोग्रामों के कारण मुसलमान हो रहे हैं। यही स्थिति टीवी में भी हैं। इसमें अलग–अलग चैनल हैं या सयम निश्चित हैं। इसके साथ–साथ कुछ प्राइवेट रेडियो स्टेशन हैं। जिस तरह ईसाई मशीनरीज़ के रेडियो स्टेशनज़ हैं, हरम शरीफ़ की नमाज़ों और हज के दृष्यों को देखकर कितने लोग मुसलमान हो गये तो उसको देखकर दूसरे साल कुछ देशों ने इस पर पाबन्दी लगा दी कि हज फ़िल्म नहीं दिखाई जा सकती, क्योंकि हज के दृष्य देखकर लोग मुसलमान हो रहे हैं।

सऊदी अरब में शाह फ़ैसल ने जब टीवी प्रोग्राम शुरू किया तो वहां के उलमा ने उनका विरोध किया तो उन्होने दलील में कहा कि हम अपना टीवी स्टेशन नहीं रखेंगे तो लोग दूसरे टीवी स्टेशनों के प्रोग्राम देखंगे। अपने टीवी पर कन्ट्रोल करना आसान है, दूसरों के टीवी पर कन्ट्रोल मुश्किल है। इसलिये वहां उस समय से टीवी का रिवाज हुआ। वहां टीवी पर पांच वक़्त की नमाज़ें, हज के समय में हज के दृष्य और दूसरे इस्लामी प्रोग्राम प्रस्तुत किये जाते है। इस बात का विश्लेषण किया गया है कि ख़बरो और चर्चों के लिये लोग टीवी देखते हैं। मगर इसके साथ विज्ञापन के रूप में या सांस्कृतिक प्रोग्रामों के रूप में व्यवहार को ख़राब करने वाले और गुमराह करने वाले, फ़िल्ने के दृष्य नज़र आते हैं। इसका इलाज केवल नेक और नियन्त्रित टीवी है।

इस समय शिक्षा का सबसे बड़ा साधन टीवी है। साइंस, तकनीक और दूसरे ज्ञान टीवी पर प्रस्तुत किये जाते हैं। इनके सारे पाठ टीवी पर आते हैं। इसी प्रकार भाषा भी टीवी पर सीखी जा सकती है। लोग कहते हैं कि रेडियो पर सुनने से भाषा जल्दी आती है लेकिन बोलते समय ज़बान की जो नक़ल व हरकत होती है वो टीवी पर देखकर ज़बान सीखने में और अधिक सहायत सिद्ध होती है। बहरहाल टीवी के फ़ायदे और नुकसान दोनों हैं और ये एक अहम मुक़दमा है। बिलाद अरबिया और दूसरे इस्लामी देशों में टीवी का दावत और इस्लाह के लिये प्रयोग प्रारम्भ हो गया है। इसी तरह इन्टरनेट का मामला है। इसमें दावत की और इस्लाह की साइट कई इस्लामी ग्रुप ने प्राप्त कर ली है और उनके अच्छे असर महसूस किये जा रहे हैं। ये इस्तिफ़ता और इफ़्ता का भी साधन हैं और इश्काल और शुबहात के इज़ाला का भी। बहुत से मदरसों और इस्लामी हल्क़ों में इससे लाभ प्राप्त किया जा रहा है।

संक्षेप में ये कि इस समय रेडियो और टीवी में कई रूप अपनाए जा रहे हैं। कुछ तो "लगातार प्रोग्राम" हैं कुछ में "धार्मिक प्रोग्राम" प्रस्तुत किये जाते हैं। और कुछ में कुछ घन्टे निश्चित हैं। इनमें दीनी प्रोग्राम होते हैं। रेडियो और टीवी दोनों का यही तरीक़ा अपनाया जा रहा है। भारत में अभी इसका अनुभव नहीं किया गया है। इसलिये यहां ऐसा नहीं हो रहा है। लेकिन रेडियो और टीवी पर कुछ अवसरों पर दीनी प्रोग्राम प्रस्तुत किये जाते हैं। दूसरे देशों में, कुछ अरब की संस्थाओं में, वो इनके द्वारा लाभान्वित हो रही हैं और इस पर बहुत रूपया ख़र्च करती हैं। इनकी न्यूज़ एजेन्सियां भी हैं, उन्होने टीवी के कुछ समय ख़रीद लिये हैं और कुछ ने अपने अलग चैनल स्थापित कर लिये हैं। कुछ जगह जैसे रेडियो में समय लिया जाता है। उन्होने इसी तरह

टीवी में समय ले लिया है, और वो उनमें अपना धार्मिक प्रोग्राम प्रस्तुत करते हैं। ऐसी संस्थांए और कम्पनियां हैं जो स्वंय इस्लामी विषयों के कैसेट आडियो (Audio Cassette) और वीडियो (Video Cassette) तैयार करती हैं, जो गानों, नाटकों, और संवाद (Dialogue) पर आधारित होते हैं ये सिलसिला भी बहुत प्रचलित होता जा रहा है।

ऐसे प्रोग्रामों का समाज पर कितना अच्छा असर पड़ रहा है और खुद टीवी वालों में कैसा रूझान पैदा हो रहा है इसका अन्दाज़ा इससे लगाया जा सकता है कि कुछ महीने पहले मिस्र में टीवी प्रोग्राम प्रस्तुत करने में कला की महारत रखने वाली सात औरतों ने इन धार्मिक प्रोग्रामों से प्रभावित होकर पर्दा करने का फैसला कर लिया, इस पर टीवी वालों ने उन्हे नौकरी से निकाल दिया जब उनको निकाल दिया गया तो लोगों ने वो प्रोग्राम देखना बन्द कर दिया। क्योंकि वो इतना अच्छा प्रोग्राम प्रस्तुत करती थीं कि उनकी जगह जब दूसरी फ़नकार औरतें आयीं तो उस प्रोग्राम की ख़्याति समाप्त हो गयी। इससे उनका नुक़सान होने लगा। जिम्मेदारों ने जब ये महसूस किया कि प्रोग्राम पेश करने का इनका अन्दाज़ इतना अच्छा है तो सोच विचार के बाद कमेटी ने उन्हे नौकरी पर बहाल करते हुए पर्दा करने की इजाज़त दे दी कि वो एहतियात के साथ वो प्रोग्राम करें। इन आर्टिस्टों ने कहा कि हम पूरा पर्दा करेंगे, आख़िरकार उनको उनकी मर्ज़ी के अनुसार पूरा पर्दा करते हुए प्रोग्राम पेश करने की इजाज़त दी गयी।

इससे पहले टीवी की एक मशहूर फ़नकारह कीमान हमज़ा ने भी पर्दा करने का फ़ैसला किया। ये टीवी की सबसे बड़ी फ़नकारा थीं। उनको उन लोगों ने नौकरी से अलग कर दिया तो उन्होने इस्लामी प्रोग्राम पेश करने के लिये टीवी के प्रोग्राम के लिये एक व्यवस्था बनायी लोगों ने उनकी मदद की और वो इसमें कामयाब हुईं, इनके प्रोग्राम बहुत प्रसिद्ध हुए और सारी दुनिया में पसन्द किये जाने लगे। इनका प्रोग्राम इन लोगों के लिये खुद एक चैलेंज बना गया। कहने का अर्थ कि मीडिया में इस तरह के इस्लामी रूझान पैदा हो गये हैं और क्षेत्र बढ़ता ही जा रहा है।

भारत में हमको इस स्थिति का अन्दाज़ा नहीं है। इस्लामी दावत की जो शक्लें दुनिया के दूसरे भागों में अपनायी जा रही हैं, हमें उनका ज्ञान नहीं। इसी तरह पत्रकारिता में जो बहुत श्रेष्ठ स्तर की पत्रिकांए है, उच्चस्तरीय किताबें हैं, चाहे वो अरबी हो या अंग्रेज़ी, या दूसरी ज़बानों में, वो विभिन्न संस्थाओं से यहां तक कि यूरोप के विभिन्न देशों से निकल रहीं हैं। उनसे हमारा संबंध नहीं रहता लेकिन ये वो साधन हैं जो मार्ग (Trends) निश्चित करते हैं। उनके अध्ययन से मायूसी के बजाए उम्मीद पैदा होती है और आशांए (Optimism) बढ़ती हैं। मुसलमानों में इनसे जो लोग परिचित हैं इन तमाम चीज़ों वो बहुत आशावादी हैं। मीडिया या प्रचार प्रसार के साधन से यूरोप में बहुत अधिक संख्या में ज्ञानी लोग मुसलमान हो रहे हैं। उनसे ये साधन इन्टरव्यू करते हैं, इसका भी अच्छा प्रभाव पड़ता है।

दिल्ली में दिसम्बर 2003ई0 में एक फ़िक्ही वर्कशाप हुआ। इस अवसर पर एक मुसलमान ज्ञानी से मुलाक़ात हुई, जो अमरीका से आये थे, ये मिस्री मूल के थे और अमरीका में एक शिक्षण संस्था के ज़िम्मेदार हैं। उनसे अमरीका और यूरोप के बारे में बातचीत हुई, 9 सितम्बर के बाद से इस्लामी दावत के काम के सिलसिले में विचारों का आदान–प्रदान हुआ। उन्होने बताया कि एक ओर सख़्त कार्यवाहियां हो रही हैं जो बहुत तकलीफ़ पहुंचाने वाली हैं, लोग जेलों में हैं, उनको कष्ट पहुंचाया जा रहा है। इस्लामी सरगर्मियों व मुसलमानों की नक़ल व हुरमत की निगरानी हो रही है। इस्लाम के विरुद्ध मीडिया सख़्त विरोधी प्रोपगन्डा कर रहा है। मगर दूसरी ओर इसकी जो प्रतिक्रिया हो रही है, वो प्रतिक्रिया इस्लाम के हक़ में जा रही है। मीडिया के विरोधी प्रोपगन्डे की प्रतिक्रिया के तौर पर लोगों में इस्लाम की हक़ीक़त जानने की फ़िक्र पैदा हो रही है और इस्लामी लिट्रेचर के अध्ययन का रूझान बढ़ रहा है। इस कारण से अत्यधिक संख्या में लोग मुसलमान हो रहे हैं। उन्होने खुद ये बताया कि बहुत तेज़ी से लोग इस्लाम की प्रति आकर्षित हो रहे हैं। तेज़ी से इस्लामी लिट्रेचर फैल रहा है और लोग इस्लाम के बारे में ज़्यादा से ज़्यादा जानना चाहते हैं।

(शेष पेज 23 पर)

एक फ़रिश्ता सिफ़त इन्सान का इंतिक़ाल

मौलाना मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

हज़रत मौलाना अली मियां साहब (रह0) के बड़े भाई और दारुल उलूम नदवतुल उलमा के साबिक़ नाज़िम डॉक्टर अब्दुल अली (रह0) पर क़दीम नदवी फ़ाज़िल हकीमुल उम्मत थानवी के ख़लीफ़ा मज़ाज हज़रत मौलाना अब्दुल बारी साहब नदवी ने जो मज़मून लिखा था, उसमें उनको फ़रिश्ता सिफ़त इन्सान क़रार दिया था। हज़रत डॉक्टर साहब का हादसा–ए–वफ़ात हमारी पैदाइश से पहले पेश आया, लिहाज़ा उनको देखने या उनकी सिफ़ात का मुशाहिदा करने का कोई सवाल ही नहीं पैदा होता। लेकिन हज़रत डॉक्टर साहब के ख़ानदान के कई अफ़राद में उन सिफ़ात का परतो देखकर अंदाज़ा हेाता है कि हज़रत मौलाना अब्दुल बारी साहब नदवी ने हज़रत डॉक्टर साहब को जो लक़ब दिया था, उसमें मुबालग़ा हरगिज़ न रहा होगा, बल्कि वह सिर्फ़ एक हक़ीक़त का इज़हार था। यह औसाफ़ ख़ास तौर से उस्ताज़ुल असातज़ा हज़रत मौलाना वाज़ेह साहब (रह0) में बहुत वाज़ेह तौर पर वाज़ेह होती थीं, जिन्होंने 9/जुमादिल ऊला/1440 हिजरी मुताबिक़ 16/जनवरी/2019 को इस आलमे फ़ानी को छोड़कर आलमे जावदानी की तरफ़ रख़्ते सफ़र बांधा। फ़इन्नल्लाहि वइन्ना इलैहि राजिऊन।

हज़रत मौलाना वाज़ेह साहब (रह0) 1972 ईसवी से अपनी वफ़ात तक दारुल उलूम नदवतुल उलमा के अदब व इंशा में कामयाब तरीन उस्ताज़ रहे। आपने कई नस्लों की तरबियत की, तर्ज़े तदरीस इतना पुर असर था कि आपके तिलाज़मा उसके असर आफ़रीनी पर मुत्तफ़िक़ हैं। इंशा और ताबीर के घंटे भी आपके पास रहा करते थे, आपकी तमरीनात तादाद में कम हुआ करती थीं, लेकिन चन्द तमरीनात ही से तलबा अपनी इस्तअदाद में नुमायां इज़ाफ़ा महसूस करते थे, क़लम रवां हो जाता था, अरबी मज़मून नवीसी में आसानी महसूस होने लगती थी, इस तरह इंशा और ताबीर के पीरियड का मक़सदे असली उन चन्द तमरीनात ही से पूरा हो जाता था।

आप नदवतुल उलमा से शाया होने वाले दोनो मजल्लात "अलबासुल इस्लामी" और "अर्राएद" की मजलिसे इदारात में शामिल थे, और दोनों के मुस्तक़िल कालमनिगार थे। आप अरबी के साहबे तर्ज़ अदीब थे। ज़बान में अजब चाशनी और हलावत थी। अहले ज़ौक़ आपकी तहरीरों के मुन्तज़िर रहा करते थे। डॉक्टर मुहम्मद अकरम नदवी लिखते हैं:

"अरबी ज़बान और अदब मौलाना का ख़ास मौज़ूअ है, दर्स व तदरीस और सहाफ़त शुग़ल व शाग़िल है। आपका इल्म व फ़ज़ल रश्के अमरान व इश्काल है। तहरीर रवां और अदीबाना है। ज़बान में बासाख़्तगी और बरजस्तगी है, उस्लूम में बएक वक़्त एक ठहरी हुई संजीदगी और संभली हुई शोख़ी बाहम मिली–जुली पायी जाती है। यह उस्लूब ऐसा है कि नाज़ुक से नाज़ुक फ़िक्री, इज्तिमाई और सियासी मसाएल पर भी शगुफ़्तगी और दिलआवेज़ी मौलाना का साथ नहीं छोड़ती। मैंने मौलाना की अक्सर तहरीरें पढ़ी हैं और जब भी कोई नई तहरीर मिलती है, पढ़े बिना नहीं रहता, यह सिर्फ़ मेरा ही हाल नहीं है, बल्कि मौलाना की तहरीरों से दिलचस्पी लेने, लुत्फ़ अंदोज़ होने और फ़ायदा उठाने में बहुत से लोग मेरे शरीक़ हैं। इससे अंदाज़ा हो सकता है कि आपकी तहरीरों में कैसी बेपनाह कशिश होती है। (सफ़रनामा–ए–हिन्दः 120)

इससे बढ़कर यह कि आप तलबा को अरबी तहरीर पर आमादा करते थे, कभी किसी ख़ास हादसे पर लिखने को फ़रमाते, कभी किसी अख़बार के तराशा को हवाला करके उसका तर्जुमा लाने को कहते, फिर जब तालिब इल्म तहरीर लेकर आता तो उसकी हिम्मत

अफ़ज़ाई करते, उसके मज़मून की इस्लाह करते, फिर "अर्राएद" में उसी के नाम से वह मज़मून शाया किया जाता, जिससे तालिब इल्म का दिल बढ़ता और धीरे–धीरे उसको अरबी लिखने पर क़ुदरत पैदा हो जाती, न मालूम आज के कितने बेहतरीन लिखने वाले मौलाना के इस निराले अंदाज़े तरबियत के परवरदह हैं और मौलाना की हिम्मतअफ़ज़ाइयों के नतीजे में आज उनका शुमार चोटी के उदबा में होता है। इस सिलसिले का एक वाक़्या आज भी राक़िम को अच्छी तरह याद है कि हज़रत मौलाना अबुल इरफ़ान साहब का हादसा–ए–वफ़ात पेश आया तो अख़बार में वफ़ात के ताल्लुक़ से एक तवील रिपोर्ट आयी, मेरे कमरे के एक साथी जो मुझसे एक साल सीनियर लेकिन कमज़ोर सलाहियत वाले थे, कहने लगे; मैं इस रिपोर्ट को सामने रखकर मौलाना अबुल इरफ़ान साहब (रह0) के हादसा–ए–वफ़ात पर अरबी में एक मज़मून तैयार करूंगा, और "अर्राएद" में छपवाऊंगा, चुनान्चे उन्होंने मज़मून तैयार किया, और हम लोगों को दिखाया भी, हम लोग अगरचे उनसे एक साल जूनियार थे, इसके बावजूद हमें मज़मून इस लाएक़ नहीं महसूस हुआ कि वह "अर्राएद" जैसे परचे में छप सके, लेकिन उनके जोश को देखकर हम सब ख़ामोश रहे, फिर वह साथी अपना वह मज़मून मौलाना वाज़ेह साहब के पास ले गए, मौलाना वाज़ेह साहब के पास ले गए, मौलाना ने उनकी बड़ी हिम्मत अफ़ज़ाई की और अगले शुमारे में वह उन्हीं के नाम से "अर्राएद" में मज़मून आया। हालांकि मौलाना वाज़ेह साहब ने ताबीरात में काफ़ी तब्दीलियां कर दी थीं, फितरी तौर पर हमारे साथी को मज़मून की इशाअत से काफ़ी ख़ुशी हुई, फिर मुस्तक़िल लिखते रहे, और आख़िरकार अच्छा लिखनेवालों में उनका शुमार किया जाने लगा।

मौलाना मरहूम अगरचे तहरीर – ख़ास तौर से अरबी तहरीर – में हिन्दुस्तान ही नहीं बल्कि पूरे आलमे इस्लाम के माया नाज़ और साहिबे तर्ज़ अदीबों में से थे, लेकिन तक़रीर व ख़िताबत से आपको मुनासबत नहीं थी, अलबत्ता मुख़्तलिफ़ मौज़ूआत ख़ास तौर से फ़िक्रे इस्लामी पर आपके मुहाज़रात हुआ करते थे, "मर्कज़ुल इमाम अबुल हसन अल नदवी, दारे अरफ़ात" में आपके बेशुमार मुहाज़रात में हाज़िरी की सआदत हासिल हुई, आप निहायत मुरत्तब अंदाज़ में अपनी बात को पेश फ़रमाते थे। आपके कलाम ख़ुशू व ज़वाएद से बिल्कुल ख़ाली हुआ करता था, कई हज़रात को कहते हुए सुना और वाक़अतन इसमें कोई मुबालग़ा नहीं है कि मौलाना वाज़ेह साहब के मुहाज़रे में सिर्फ़ मतन हुआ करता है, आप ख़ास तौर से इस पहलू को उजागर किया करते थे कि जब अहले यूरोप को अंदाज़ा हुआ कि हम मुसलमानों से हथियारों की जंग में ग़ल्बा हासिल नहीं कर सकते तो उन्होंने इल्मी और फ़िक्री महाज़ों को अपना हथियार बनाया और इस नए हथियार से आलमे इस्लाम पर हमला बोल दिया , लिहाज़ा उनका मुक़ाबला उन्हीं के अस्लहों से किया जा सकता है।

आपने मुख़्तलिफ़ फ़िक्री व अदबी मौज़ूआत पर कई किताबें भी तस्नीफ़ फ़रमाई हैं, जिनको इल्मी व अदबी हल्क़ों में क़द्र की निगाह से देखा जाता है और उनको अपने मौज़ूअ पर बेहतरीन किताबें क़रार दिया जाता है।

आप जब नदवतुल उलमा के मोतमद तालीम बनाए गए तो आपने इन्क़िलाबी क़दम उठाते हुए एक मज़ीद दर्जे का इज़ाफ़ा किया और निसाबे तालीम इस तरह रखा कि आलमियत के आख़िरी साल तक हिदाया आख़िरीन और हदीस की बुनियादी किताबें पूरी हो जाएं, इससे बिला शुब्हा उन तलबा को ग़ैर मामूली फ़ायदा हुआ, जिनको नदवा में फ़ज़ीलत करने का मौक़ा नहीं मिल पाता था, और बहुत से अहम मुबाहिस उनके सामने नहीं गुज़र पाते थे।

इस्लाम का आकर्षण

इस्लाम मानवीय जीवन के सभी पहलुओं को अपने अन्दर समेटे हुए है। जीवन का कोई भाग इस्लामी शिक्षाओं से वंचित नहीं है। इबादत हो, राजनीति हो, अर्थव्यवस्था हो, व्यवहारिकता हो, पेड़–पौधे हों, पशु–पक्षी हों, शिक्षा व प्रशिक्षण का मैदान हो, तात्पर्य यह कि इस्लाम में हर एक के लिए मार्गदर्शन मौजूद है। क्योंकि इस्लाम व्यापक एवं संतुलित जीवन व्यवस्था है और यही व्यापकता उसके आकर्षण का कारण है।

हज़रत मौलाना सैय्यद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी (रह०)

मौलाना सैय्यद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी (रह०)

आइना-ए-ज़ात व सिफ़ात

अब्दुस्सुब्हान नाख़ुदा नदवी

मौलाना सैय्यद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी (रह0) गुलिस्ताने नदवतुल उलमा के वह गुल थे जिससे सारा गुलशन महकता था। ख़ुदावन्द कुद्दूस ने आपको मुख़्तलिफ़ ख़ुसूसियात व कमालात से नवाज़ा था। बड़ी साफ़–सुथरी ज़िन्दगी आपने बसर फ़रमाई। निहायत पाकीज़ा हालत में आपकी वफ़ात हुई। पाकीज़ा ज़िन्दगी और मौत की झलक आपकी मुबारक ज़िन्दगी और मौत में देखी गयी।

मौलाना मोहतरम की ज़िन्दगी को मुख़्तलिफ़ पहलुओं से देखा जा सकता है। उनमें हर पहलू मुबारक, मुफ़ीद और सबक़ आमोज़ है। उनमें एक अज़ीम पहलू आपकी इन्सानियत और इन्सानियत नवाज़ी है।

1– मौलाना एक करीम और बाबरकत इन्सान थे। मौलाना के बराहरास्त शार्गिद दसियों हज़ार और बिलवास्ता शार्गिद पचासों हज़ार होंगे। जिन तलबा व उलमा में आपसे कस्ब फ़ैज़ किया वह आपकी आला व अरफ़ा सलाहियतों की गवाही के साथ–साथ यह गवाही भी ज़रूर देंगे कि आप एक करीमुन्नफ़्स जौहरे इन्सानियत से मालामाल शख़्सियत थे। शायद आपके शार्गिदों ने हुसूले इल्म से पहले आपसे इन्सानियत का सबक़ पढ़ा होगा। रसूले अकरम स0अ0 ने एक अच्छे और सच्चे मुसलमान का तारूफ़ जिन औसाफ़ से फ़रमाया, हमने मौलाना अलीउर्रहमा की ज़ाते गिरामी में वह मुबारक औसाफ़ देखे और ख़ूब देखे। (सही मुसलमान वह है जिसकी ज़बान और हाथ से मुसलमान महफ़ूज़ हों) (मोमिन न ताना देने वाला होता है न लानत करने वाला होता, न फ़हश गो होता है, न घटिया काम करने वाला) (लोगों में सबसे बेहतर वह है जो लोगों को ज़्यादा फ़ायदा पहुंचाए) (तुममें कोई मोमिन नहीं हो सकता यहां तक कि अपने भाइ के लिए वही पसंद करे जो अपने लिए पसंद करता है) (ईमान वालों में ईमान के लिहाज़ से कामिल वह है जिसके अख़लाक़ सबसे अच्छे हों) (रसूलुल्लाह स0अ0 से पूछा गया कि लोगों को सबसे ज़्यादा जन्नत में दाख़िल करने वाली चीज़ कौन सी है आप स0अ0 ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह का ख़ौफ़ और अच्छे अख़लाक़) (मोमिन बड़ा बेज़र इन्तिहाई शरीफ़ होता है)

यह मुबारक हदीसें और ऐसी ही दर्जनों हदीसें मुबारक हैं जिनका चलता–फिरता नमूना मौलाना सैय्यद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी (रह0) थे। ख़ामोश तबियत के, मामला फ़हम, हालात और वाक़्यात पर निगाहे बसीरत रखने वाले, मसाएल का सच्चा हल तलाश करने और पेश फ़रमाने वाले, ख़ौफ़े ख़ुदा से मामूर, सलाहियत और सालिहत का पाकीज़ा नमूना। यह आपके वह औसाफ़ थे जिनको आपकी ज़ाते बाबरकत का जुज़े आला यनफ़िक कहा जाए तो बेजा न होगा। लब आपके अक्सर ख़ामोश रहते लेकिन दिल आपका सुलगता था और दिल की यही हरारत पुरनूर किरनों और शुआओं की सूरत में आपकी तहरीरों में नुमायां होती।

फ़िक्रे इस्लामी:

आपका बुनियादी मौज़ू फ़िक्रे इस्लामी था। दारुल उलूम नदवतुल उलमा ने दुनिया को जो फ़िक्री उलमा दिए उनकी एक मुख़्तसर फ़ेहरिस्त तैयार की जाए तो उसमें भी आपका नाम बड़ा नुमायां रहेगा। सच्ची बात तो यह है कि यह आपका मौज़ू ही नहीं। आपकी ग़िज़ा और ज़िन्दगी थी। ख़ुद आपने एक बार यह बात कही कि फ़िक्रे इस्लामी की बुनियाद हम हैं। अन्दर ही अन्दर खाए जाने वाले ग़म को 'हम्म' कहा जाता है। किसी की यह कैफ़ियत न हो तो वह फ़िक्रे इस्लामी का ना हामिल

बन सकता है, न इल्म अलमबरदार। जिन हज़रात ने आपकी तहरीरों से फ़िक्री ग़िज़ा हासिल की है वह बता सकते हैं कि हज़ारों सफ़हात पर मुश्तमिल आपके मक़ालात में कोई एक जुम्ला भी शायद ऐसा न हो जिससे बेफ़िक्री झलके, या वह बात महज़ ज़ेबे दास्तान के लिए टॉनिक दी गयी हो। इसकी बुनियाद भी वही हम्म है जो आपको खा रहा था। रसूले अकरम स0अ0 के बारे में रावी कहते हैं कि रसूलुल्लाह स0अ0 फ़िक्रमन्द रहते, अक्सर ग़मग़ीन रहते, बहुत ख़ामोश रहते, आपको चैन नहीं था। हुज़ूर–ए–अकरम स0अ0 की इन सिफ़ात की झलक आपकी ज़िन्दगी में ख़ूब नज़र आती थी। मैंने आपकी बात जितनी बात सुनी है उसका महवर अक्सर फ़िक्रे इस्लामी, इन्सान और फ़िक्रे इन्सानियत होता।

आजकल यह जो फ़ैशन चला है कि महज़ वक़्त गुज़ारी के लिए मसाएल छेड़े जाते हैं और उनके ऊट–पटांग हल पेश किए जाते हैं और मौलाना की शख़्सितय उससे बहुत आला व अरफ़ा थी। वक़्त गुज़ारी की बात अलग रही। हमने कभी मौलाना की ज़बान से ग़ैर संजीदा बात भी नहीं सुनी कि आइनादार थी। आपकी ज़िन्दगी इन्सानियत की यही अदाएं हैं जो इन्सान को आम लोगों से मुमताज़ बनाती हैं और शायद मौलाना की ज़िन्दगी से लिया जाने वाला यह सबसे अहम सबक़ है।

ख़ैरख़्वाहीः

मौलाना की अज़ीम सिफ़त ख़ैरख़्वाही की थी। मुझे मौलाना से बराहरास्त पढ़ने का मौक़ा नहीं मिला लेकिन आपके बहुत से शागिर्दों से मैंने सुना कि आपकी पूरी कोशिश होती कि शागिर्दों में अस्ल फ़न की तड़प पैदा करें। एक उस्ताद किताब अच्छी तरह पढ़ाए, वह कामयाब उस्ताद है, उससे बढ़कर कामयाब वह है जो फ़न की बारिकियां बताए और अहम मालूमात से शागिर्दों को सैराब कर दे। शायद सबसे बढ़कर कामयाब वह है जो अपने तिलामिज़ा में इल्म की प्यास पैदा करे। हुसूले इल्म की राहें बताए और इस सिलसिले में पूरी रहनुमाई करे। मौलाना सैय्यद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी (रह0) इस मफ़हूम के लिहाज़ से इन्तिहाई कामयाब उस्ताद थे। एक मुशफ़िक़ मुरब्बी और एक सच्चे रहबर जो भी आपसे रहनुमाई हासिल करना चाहता, आप उसे कभी सरसरी अंदाज़ से न लौटाते। जिसने भी आपसे ताल्लुक़ रखा वह आपके इस वस्फ़े ख़ास की ज़रूर गवाही देगा।

इल्म की क़द्र व क़ीमतः

आपकी मजलिसों में इल्म पर ख़ास ज़ोर दिया जाता, एक बार इसी सिलसिले में फ़रमाया कि इल्म की कोई इन्तिहा नहीं, जब रसूल–ए–अकरम स0अ0 तक को अल्लाह तआला ने "रब्बि ज़िदनी इल्मन" (ऐ मेरे परवरदिगार! मेरे इल्म में इज़ाफ़ा फ़रमा) के ज़रिए दुआ करने का हुक्म दिया तो हर तालिब इल्म को समझ लेना चाहिए कि इल्म ऐसी नेमत है जिसकी कोई इन्तिहा नहीं। एक बार अजीब बात फ़रमाई कि इल्म कोई लिफ़्ट नहीं कि आदमी सवार हुआ और सीधा ऊपर पहुंच गया, इल्म दर्जा ब दर्जा चढ़ने का नाम है। यह अनथक मेहनत चाहता है, तब कहीं जाकर इन्सान कुछ बुलन्दी तय कर सकता है। लोगों ने इल्म को लिफ़्ट समझ लिया है, जिसके नतीजे में सतही मालूमात हासिल हो जाती है, लेकिन बुनियाद ख़ाली रहती है।

मुताला–ए–सीरत की ताकीदः

मौलाना (रह0) को इसका बड़ा शिकवा था कि अहले इल्म का ख़ासकरके तलबा का मुताला बराए नाम रह गया है, फिर जो लोग मुताला करते हैं, वह बात की गहराई तक नहीं पहुंचते। जिसकी वजह से कभी–कभी फ़िक्री नाहमवारी पैदा हो जाती है। मौलाना इस सिलसिले में सीरत के गहरे मुताले की शदीद ताकीद फ़रमाते और यह कहते कि सीरत के सही मुताले से ज़िन्दगी के तमाम गोशों में चाहे वह फ़िक्री हों, इल्मी हों या तरबियती व तालीमी हों, बल्कि सही अल्फ़ाज़ में तमाम इन्सानी गोशों में हर तरह का तवाज़ुन और जामईयत पैदा होती है। इसके ज़रिए इन्सान ज़िन्दगी के हर मैदान में एक मुतअद्दिद, मुतनासिब और जामेअ नमूना पेश कर सकता है। मौलाना यह भी फ़रमाते थे कि लोग सीरत को भी एक ख़ास ज़ाविए से पढ़ते हैं। सीरत किसी ज़ाविए से मुताला करने की चीज़ नहीं है, बल्कि सीरत खुद ज़ाविया साज़ है। उसकी रोशनी में अपने ज़ाविया–ए–नज़र, ज़ाविया–ए–फ़िक्र और

ज़ाविया–ए–अमल को बल्कि ज़ाविया–ए–ज़िन्दगी को दुरुस्त करना और नुक़्ता–ए–निगाह को क़ायम करना चाहिए। सीरत का मुताला दरहक़ीक़त एक लामहदूद चीज़ को महदूद दाएरे में समेटने का नाम है, जिसके नताएज ख़ातिरख़्वाह बरामद नहीं हो सकते।

जहद–ए–मुसलसल:

मौलाना अगरचे ख़ामोश तबियत के थे, लेकिन आपने जहद–ए–मुसलसल की ज़िन्दगी बसर फ़रमाई। आपको मुख़्तलिफ़ अवारिज़ लाहक़ थे, लेकिन अपनी ज़िम्मेदारी बेहतर से बेहतर अंदाज़ से पूरी फ़रमाते रहे। एक बार ख़ुद मुझसे कहा कि "मुझे बवासीर की शदीद तकलीफ़ रहती थी, इस क़दर कि बैठना ही मुमकिन न रहता, मैंने शदीद तकलीफ़ के आलम में "अर्राएद" के कई मज़ामीन खड़े–खड़े लिखे हैं।" चूंकि मुझे कुछ साल पहले इस तकलीफ़ से गुज़रना पड़ा था, इसलिए मेरी ख़ैरियत पूछते हुए बातों–बातों में अपना यह हाल बयान फ़रमाया, वरना कभी यह बात न बताते।

हक़गोई:

मिज़ाज में नर्मी थी, लेकिन यह नर्मी हक़ गोई में कभी आड़े न आई, हर मामले में अपनी ख़ास राय रखते। जहां मामला आम इख़्तिलाफ़–ए–राय का होता, वहां किसी राय पर असरार न होता, न नकीर होती, लेकिन जहां मामला हस्सास क़िस्म का होता, वहां अपनी राय पेश फ़रमाते और किसी ताल्लुक़ वाले की राय ग़लत होती, वहां साफ़ खुलकर उससे अपनी राय बदलने के लिए कहते।

मालूमात की वुसअत व गहराई:

मौजूदा दौर में चन्द ही लोग होंगे जिनकी हालाते हाज़िरा पर इतनी वसीअ और गहरी नज़र है। तारीख़े इस्लाम और तारीख़े यूरोप पर भी आप बराहे रास्त गहरी मालूमात रखते थे। आप जिस सतह के इस्लामी मुफ़क्किर, अदीब और सहाफ़ी व तजज़ियाकार थे, उस सतह के लोग आलमे इस्लाम में कम पाए जाते हैं। आपकी तहरीरों में एक तरफ़ क़लम की रवानी और फ़िक्र की जौलानी होती तो दूसरी तरफ़ सही तजज़िया और साएब मशवरे होते। आप मसाएल का सरसरी हल कभी न बताते, बल्कि हमेशा असबाब का पता लगाकर उनको दुरुस्त करने की दावत देते, ताकि मसाएल पैदा ही न हों, यह हक़ीक़त में फ़हमे कुरआन का फ़ैज़ था जो ख़ुदा वन्दे कुद्दूस ने आपको वाफ़िर मिक़दार में अता फ़रमाया था। रोज़ाना तिलावत सुनने के मामूल ने जो साठ साल से बिला नाग़ा जारी रहा, आपके ज़हन को ऐसे सांचे में ढाल दिया था कि कोई मसला हो तो आपका ज़हन उसकी तह तक पहुंच जाता। यह ख़ासियत आम तौर पर उन लोगों में पायी जाती है, जिनके दिन–रात फ़हमे कुरआन के हुसूल के लिए बसर होते हैं। मेरा ख़्याल है कि जिन लोगों ने मौलान की तहरीरें देखी हैं, वह इसकी गवाही ज़रूर देंगे कि हालाते हाज़िरा पर मोतदिल जाएज़ा आप फ़रमाते हैं और जिस तरह का मुनासिब हल आपको तजवीज़ फ़रमाते हैं, कम लोग इस गहराई तक पहुंचते हैं। किताब व सुन्नत के फ़ैज़ के बाद आपके वुसअत मुताला को भी इसमें ख़ासा दख़ल है। आप बराहेरास्त अंग्रेज़ी माख़ज़ से वाक़िफ़ थे। अरब मुफ़क्किरीन पर भी आपकी बसीरत पर मुबनी निगाह थी। मुस्तशरिक़ीन को आपने जितना पढ़ा इन्तिहाई इन्तिहाई कम लोग इसमें आपके हमसर होंगे। जो मालूमात आपको हासिल थीं उनमें आप किसी के नक़्क़ाल नहीं थे। इसलिए आपकी तहरीरें हमेशा बावज़न रहीं और जहां–जहां आपकी तहरीरें पहुंचीं (ख़ासकर आलम–ए–अरबी में) वहां उनका वज़न महसूस किया गया, और उनका असर क़ुबूल किया गया।

यह सच है कि मौलाना सैय्यद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी (रह0) अब हममें नहीं रहे। लेकिन यह भी इन्हाई सच है कि मौलाना अपनी इन्सानियत, अपनी पाकीज़ा सीरत, अपनी दसियों किताबों, सैंकड़ों रहनुमा तहरीरों, अपने हज़ारों बिला वास्ता और शायद लाखों बिलवास्ता शार्गिदों, अपने नेक व सालेह औलाद व अहफ़ाद के ज़रिये हममें मौजूद हैं और अल्लाह ने चाहा तो यह सिलसिला दराज़ से दराज़ तक होता चला जाएगा। ख़ुदाए रहमान व रहीम करवट–करवट जन्नत नसीब फ़रमाए और हज़रात अम्बियाए किराम, सिद्दीक़ीन, शुहदा और सालिहीन की मईयत मौलाना को और हम तमाम को नसीब फ़रमाए, आमीन।

इस्लामी शिक्षा व्यवस्था

मौलाना सैयद आसिफ़ मिल्ली नदवी

रुत ही बदल गयी है, पैमाने बदल गए हैं, अन्दाज़ बदल गया है इसका कारण यह है कि सोच बदल गयी है। मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह स0अ0 ने क़यामत की सुबह तक मुसलमानों को दुनिया बेहतर बनाने और आख़िरत संवारने के जो उसूल और क़ानून बताए थे, हम उन उसूलों और क़ानूनों को नज़रअन्दाज़ कर रहे हैं। आप स0अ0 की शिक्षा में केवल आख़िरत ही की नहीं बल्कि दुनिया की भी सफलता निहित है।

इस्लाम केवल कुछ काम अदा कर देने का नाम नहीं है जिसे कुछ समय के लिए अपनाकर उसके दायरे से निकला जाए बल्कि यह उस संग्रहण का नाम है जिसमें एतक़ादात, इबादत, सामाजिकता, सफल जीवन और उज्ववल भविष्य यानि आख़िरत की भलाई और पनाह है। जब तक इस्लाम की रूह को नहीं समझा जाएगा उस वक़्त तक हम क़ौम की हैसियत से उन्नति नहीं कर सकते हैं। हमारी सभी उन्नतियां इस्लाम के दामन से जुड़ी हुई हैं।

इस संदर्भ से हमें रसूलुल्लाह स0अ0 की पवित्र जीवनी से मार्गदर्शन लेने की आवश्यकता है। आप स0अ0 के कथनों पर अमल किए बिना सफल जीवन केवल छलावा है जिससे आज का मुसलमान धोखे का शिकार हो रहा है।

यदि मानवता के इतिहास पर निगाह डाली जाए तो यह वास्तविकता खुलकर सामने आती है कि जबसे अल्लाह तआला ने मानवता को अस्तित्व प्रदान किया उस समय से मर्द और औरत एक दूसरे के पूरक की हैसियत से बराबर चले आ रहे हैं। मर्द को अल्लाह तआला ने बाहरी कामों का ज़िम्मेदार बनाया तो औरत को घर के अन्दर की ज़िम्मेदारी सौंपी। मर्द घर के बाहर के सभी मामलों की देखरेख करने वाला है और औरत घर के अन्दर के सभी कामों को करने वाली है।

चूंकि मर्द व औरत दोनों ही समाज में अपनी अपनी हैसियत रखते हैं इसलिए दोनों को आसमानी हिदायतों व आदेशों को उत्तरदायी बनाया गया है। इस्लामी आदेशों पर अमल दोनों के लिए आवश्यक है।

अब दूसरी ओर यह बात अपनी जगह पर अटल है कि अमल का भार इल्म पर है। ज्ञान सही होगा तो काम भी सही होगा और यदि ज्ञान सही न हुआ तो काम भी सही न होगा। जिस प्रकार मर्द की शिक्षा उसके लिए आवश्यक है उसी प्रकार औरतों के लिए भी शिक्षा उनके जीवन का एक अभिन्न अंग है। यदि मर्द अशिक्षित होकर जीवन यापन करेगा तो समाज के लिए संकट और नुक़सान उठाने वाला होगा और इसी प्रकार यदि औरत अशिक्षित है तो वह ज़माने पर बोझ होगी।

पता चला कि मर्द की तरह औरत की शिक्षा भी अत्यन्त आवश्यक है। यहां तक तो सब सहमत हैं, झगड़ा इसके बाद शुरू होता है। इस्लाम की शिक्षा व्यवस्था में औरत को केवल शिक्षा ही नहीं बल्कि उसकी लाज, पवित्रता और मान सम्मान व शराफ़त को भी ध्यान में रखा गया है कि यह शिक्षा तो बहरहाल प्राप्त करे लेकिन इस्लाम के दायरे के अन्दर रहते हुए। ऐसी शिक्षा जिससे उसकी दुनिया भी संवर जाए और आख़िरत भी।

आप स0अ0 के तरीक़े को देखते हुए हदीस की शरह लिखने वाले यह नतीजा निकालते हैं कि इस्लाम में औरतों की शिक्षा आवश्यक है। लेकिन शिक्षा प्राप्त करते समय इस बात का बखूबी ध्यान रखना चाहिए कि जो काम उसे ज़िन्दगी में पड़ते रहते हैं, उन्हीं कामों को शिक्षा से सुसज्जित करना चाहिए। यानि

लिखना, पढ़ना, अक़ीदे का सुधार, सभ्यता व संस्कृति, वे कलाएं जिन पर दुनिया व आख़िरत की सफलता का दारोमदार है, औलाद का प्रशिक्षण, पति की सेवा, दूसरो के अधिकारों की पूर्ति इत्यादि।

हदीस की दूसरी किताबों में इस बारे में अत्यधिक रिवायतें मौजूद हैं। तिबरानी में रसूलुल्लाह स0अ0 का इरशाद कुछ इस तरह से है: जो शख़्स अपनी बेटी को ख़ूब अच्छी तरह शिक्षा दे उसका अच्छे से प्रशिक्षण करे और उस पर दिल खोलकर ख़र्च करे तो यह बेटी कल क़यामत के दिन उसके लिए जहन्नम की आग से नजात साधन होगी।

इस हद तक तो इस्लामी व्यवस्था में औरतों के शिक्षा संबंधी अधिकार और आवश्यकताएं साबित हैं। बाकी रही पश्चिमी शिक्षा व्यवस्था और औरतों की समस्या!! यह एक विचारणीय पहलू है और चिन्ता का क्षण है कि पश्चिम लेबल तो औरतों की शिक्षा का लगाता है लेकिन वास्तव में वह सहशिक्षा व्यवस्था को बढ़ावा देने हेतु प्रयासरत है।

पश्चिमी शिक्षा व्यवस्था में औरतों को सरासर मुश्किलों का सामना है जिसमें औरतों की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता लाज समाप्त हो जाती है। वह अपनी इज़्ज़त व सम्मान से हाथ धो बैठती है। पश्चिमी शिक्षा व्यवस्था में आस्था व कर्म का सुधार तो एक ओर इसमें न तो इस्लामी संस्कृति की छाप है न कोई आसार। न पारिवारिक शिक्षा का कोई सबक़ है न घरेलू शिक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाने का कोई फ़ार्मूला। औलाद की तरबियत के बारे में न कोई हिदायत मिलती है न ख़ुशहाल पारिवारिक जीवन की कोई गारंटी। इसलिए इस्लाम की बेटियों को इस्लाम के ही दामन से जुड़ा रहना चाहिए ताकि उनकी दुनिया भी संवर जाए और आख़िरत भी।

शेषः इस्लामोफ़ोबिया

लेकिन इन सभी दुष्प्रचारों व हिंसात्मक कार्यवाहियों के बाद इस्लाम एक अन्तर्राष्ट्रीय विषय बन गया। विशेषतया यूरोप व अमरीका की जनता के ध्यानाकर्षण का केन्द्र बन गया। लोगो में जिज्ञासा पैदा हुई। कुछ ने वास्तविकता जानने के लिये तो कुछ ने कमियां ढूंढने के लिये इसका अध्ययन करना शुरू किया। इन्टरनेट की दुनिया में "मुहम्मद" व "इस्लाम" शब्द को सबसे ज़्यादा सर्च किया जाने लगा। कुरआन करीम की तो रिकार्ड तोड़ प्रतियां बिकीं। यूरोप व अमरीका के बाज़ारों में इस्लामी किताबों की मांग बढ़ती गयी। यूनिवर्सटियों में इस्लाम पर पीएचडी करने वालों का सिलसिला चल पड़ा। सैंकड़ो संस्थाओं ने इस्लामिक स्टडीज़ के विभाग की स्थापना की और फिर इसके अध्ययन व खोज ने उनका हृदय परिवर्तन कर दिया। इस्लाम की वास्तविकताओं ने उनके मस्तिष्क को प्रकाशित कर दिया। मीडिया के दुष्प्रचार की क़लई खुल गयी और एक बहुत बड़ी संख्यां में लोगो ने इस्लाम स्वीकार किया। उनमें पश्चिम के प्रतिभावान लोग भी शामिल थे। विभिन्न विभागों के माहिर भी थे और विभिन्न क्षेत्रों की महत्वपूर्ण हस्तियां भी थीं।

पिछले कुछ सालों में जिन चर्चित हस्तियों ने इस्लाम को अपनाया उनमें कुछ महत्वपूर्ण नाम यह हैं: अरब टैलेन्ट में दूसरा स्थान प्राप्त करने वाली तेइस साल की अमरीकी पॉप सिंगर जेनिफ़र ग्राव्ट, फ़िलीपाइन के चर्चित गायक फ्रेडी एगोन्कर, थाइलैन्ड में जर्मन दूत यास्मीन, फित्ना फिल्म में प्रोड्यूसर अन्नाउड फ़ान्डवर्न, बाक्सर मुहम्मद अली, यान रेडली मरियम, माहिर शिक्षाविद् प्रोफ़ेसर कार्ल मार्क्स, इंग्लैन्ड की मॉडल कार्ले वाट्स, अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त डॉक्टर विलियम्ज़, प्रचारक मुहम्मद यूसुफ़, विख्यात पॉप सिंगर माइकल जैक्सन के भाई व बहन जैसे सैंकड़ो लोग हैं जिन्होंने इस्लाम की वास्तविकता के सामने सर को झुका दिया है। इनके अतिरिक्त पॉप सिंगर माइकल जैक्सन व राजकुमारी डायना के बारे में भी खबरें थी कि उन्होंने भी इस्लाम कुबूल कर लिया है।

तमाम षड़यन्त्रों व दुष्प्रचारों के बावजूद भी इस्लाम यूरोप वासियों में सबसे प्रसिद्ध और तेज़ी से फैलने वाला धर्म है। और इस्लामोफ़ोबिया एक क्षणिक रोग है जिसका उपचार स्वयं इस्लाम धर्म में ही है।

हिन्दु-मुस्लिम संबंध तथा अतिराष्ट्रवाद

डॉक्टर एहसानउल्लाह फ़हद

इस्लाम और मुसलमानों के आने से पहले भी हिन्दुस्तान अलग–अलग मज़हबों का केन्द्र रहा है। आम तौर पर यहां के लोगों ने एक–दूसरे का सम्मान किया और उदारता व ख़ुशदिली को अपनी ज़िन्दगियों में शामिल रखा। इस्लाम और मुसलमानों के आने ने इस जज़्बे को बढ़ाया। कल्चर व संस्कृति में नुमायां बदलाव पैदा हुए। उदारता का प्रदर्शन हुआ। मुसलमान शासक अपनी इन्साफ़ पसंदी के लिए प्रसिद्ध थे। आम मुसलमानों के सभ्य रवैये, शालीन तरीक़े, इबादत तथा मानवीय समानता के सम्मान के आधार पर वह देशवासियों के निकट प्रसिद्ध हुए। दीन–ए–हक़ की तालीम से प्रभावित होकर दबी–कुचली आबादियों ने इस्लाम क़ुबूल किया।

कशमकश की सूरतेहाल उस वक़्त पैदा हुई जब तथाकथित ऊंची ज़ात वालों को ख़तरा हुआ कि इनका ख़ुद का बनाया ऊंच–नीच का निज़ाम समाप्त हो जाएगा तो उनकी चौधराहट और वर्चस्व ख़त्म हो जाएगा। उन्होंने पुराने ज़माने से ऊंच–नीच की बुनियाद पर चार हिस्सों में लोगों को बांट करके ख़ुद को ऊंचे स्थान पर बिठा रखा था। इस व्यवस्था के सुचारू रूप से चलने के लिए बहुत सी आस्थाएं गढ़ ली थीं और लोगों को कुछ रस्म व रिवाज का पाबन्द किया था। मुसलमान तौहीद (एकेश्वरवाद) के मानने वाले और मानवीय समानता की शिक्षा के पक्षधर थे। स्थानीय आबादियां इस्लाम की सामाजिक व्यवस्था में कशिश महसूस करती थीं। मुसलमानों की इस आस्था और सामाजिक व्यवस्था से समाज विरोधी तत्वों ने ख़तरा महसूस किया तो उन्होंने मुसलमानों के ख़िलाफ़ मुहिम शुरू की। उनके इस आंदोलन की अंग्रेज़ी शासकों ने समर्थन किया और हिन्दु जनता को मुसलमानों के ख़िलाफ़ भड़काना शुरू कर दिया।

फूट डालो और राज करो की अंग्रेज़ पॉलिसी: मुस्लिम व्यापारी, सूफ़ीवादी, धर्म प्रचारक तथा मुसलमान शासकों ने अपने दौरे हुकूमत में उदारता और सहिष्णुता का जो फलदार पेड़ तैयार किया था वह मुसलमानों की हुकूमत के ख़ात्मे के साथ समाप्त होना शुरू हो गया। मुस्लिम शासको के पतन के बाद अंग्रेज़ी शासन का सूरज निकला। देखते–देखते ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने पूरे हिन्दुस्तान पर अपनी हुकूमत को मज़बूत कर लिया। टीपू सुल्तान की शहादत के बाद हिन्दुस्तान अंग्रेज़ों के क़ब्जे में था। अब अंग्रेज़ों की पॉलिसी तय हुई कि हिन्दु और मुसलमान को आपस में लड़ाओ और हुकूमत पर क़ाबिज़ रहो। सोमनाथ मंदिर के दरवाज़ों के पुनर्निमाण के मौक़े पर अंग्रेज़ गवर्नर जनरल ने हिन्दु राजाओं और सरदारों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज अन्ततः आठ सौ साला पुरानी बेइज़्ज़ती का बदला ले लिया गया। इसी तरह दूसरे गवर्नर जनरल लार्ड डलहौजी का रवैया भी हिन्दुस्तानी मुसलमानो के साथ पक्षपातपूर्ण रहा। 1853 ईसवी में उसने एक दोस्त को जो ज़ाति ख़त लिखा था, उसमें उसने अपनी सोच और मुस्लिम दुश्मनी को खुलकर प्रकट किया था। वह लिखता है कि: "अवध का दरबार खरदिमाग़ी की ओर आकर्षित नज़र आता है। मैं चाहता भी यही हूं कि ऐसा ही हो। अपनी रवानगी से पहले उसे हज़म कर पाना मेरे लिए बड़ी सन्तुष्टि का कारण होगा। दिल्ली का बूढ़ा शख़्स अपनी मौत आप मर रहा है। अगर कोर्ट ऑफ़ डाएरेक्टर्स की मूर्खता न आड़े आती तो मैं कभी का उस खूंसठ के साथ ही ख़ानदान–ए–तैमूरी का ख़ात्मा कर चुका होता।"

अंग्रेज़ हुकूमत की यह पॉलिसी थी कि हिन्दुओं और मुसलमानों को आपस में लड़ाकर ही हम अपनी हुकूमत को मज़बूत रख सकते हैं। अतः उन्होंने हिन्दुओं के लीडरों, पण्डितों और धार्मिक आकाओं के सामने इस बात को दोहराना शुरू कर दिया कि मुसलमानों ने अपने दौरे हुकूमत में हिन्दुओं पर बड़े अत्याचार किये हैं। उनके मंदिरों को तोड़ा है और बर्बाद किया है। इस तरह की बातों के ज़रिए उन्होंने हिन्दुओं की भावनाएं भड़काना शुरू किया और अंग्रेज़ों की यह पॉलिसी कामयाब हो गयी। इसीलिए छोटी–छोटी बातों पर साम्प्रदायिक तनाव शुरू हो गया और धार्मिक फ़सादों का सिलसिला शुरू हो गया। इस दौर में जानबूझकर बहुत से फ़साद कराए गए। इन हालात से बदलने और आपसी अमन व अमान की फ़िज़ा को परवान चढ़ाने में दोनों फ़िरक़ों के अच्छे ज़हन के लोगों ने अनथक कोशिश की लेकिन उनकी कोशिश हुकूमती मशीनरी के सामने बेकार साबित हुई और दोनों सम्प्रदायों के बीच तनाव और दूरी बढ़ती गयी। साम्प्रदायिक दंगों ने इस खाई को बड़ा करने में नुमायां रोल अदा किया। हिन्दु और मुसलमानों के बीच अमन व शांति की कोशिश करने वालों ने हिम्मत नहीं हारी और लगातार दोनों सम्प्रदायों को उदारता पर आमादा करने की कोशिश करते रहे। उनकी कोशिशों के नुमायां असर उस वक़्त नज़र आने लगे जब हिन्दु और मुसलमान दोनों क़ौमों ने आज़ादी की लड़ाई की शुरूआत की। अंग्रेज़ साम्राज्य के ख़िलाफ़ हिन्दुस्तान की आज़ादी का नारा लगाया। अंग्रेज़ों को हिन्दुस्तान से निकालने की कोशिश की तो बिट्रिश साम्राज्य के पैर उखड़ गए और आख़िरकार 1947 में हमारा मुल्क हिन्दुस्तान आज़ाद हो गया।

देश का बंटवारा तथा उदारता की घटनाएं: बिट्रिश साम्राज्य की ओर से पैदा किए गए नकारात्मक वातावरण स्वतन्त्रता आंदोलन तथा तहरीक–ए–ख़िलाफ़त के साए में ख़त्म होती गयी और हिन्दु मुसलमान क़रीब आ गए। लेकिन हिन्द व पाक बंटवारे ने फिर से नफ़रतों को खुलकर खेलने का मौक़ा दिया और लाखों इन्सानों को मौत की नींद सुला दिया गया। लेकिन इस हिन्द–पाक बंटवारे के दौरान भी दोनों की ओर से उदारवादी नमूने पेश किए गए। अविभाजित भातर के पश्चिमी पंजाब की मुस्लिम बहुसंख्यकों वाली रियासत बोदिया ने न जाने कितने गर्म व सर्द मौसम देखे और कितने उतार–चढ़ाव आए लेकिन उसकी मिट्टी से इन्सानियत और रवादारी की ख़ुशबू कभी न गयी। बंटवारे के समय हिन्दुस्तान में जुनून अपने शबाब पर था। दोनों तरफ़ से इन्सानों के लिए लुटे–पिटे काफ़िले सर छिपाने के लिए दरबदर की ठोकरें खा रहे थे। लोग अपनी जड़ों से उखड़ गए थे। पलायन और हिजरत का सिलसिला जारी था। पूरा मुल्क आग और ख़ून के दरिया से गुज़र रहा था। पश्चिमी पंजाब के मुसलमान अपना बोरिया–बिस्तर बांध कर एक अजनबी देश और एक अनजानी मंजिल की तलाश में अपना घर–बार छोड़कर निकल खड़े हुए थे और जो नहीं गए थे वह अपनी जान–माल की तबाही के ख़ौफ़ से लरज रहे थे।

ऐसी बेयक़ीनी की हालत में बोडिया के हज़रत मुल्ला जी अल्हाज अब्दुल करीम मुसलमानों को धैर्य एवं धीरज का पाठ पढ़ा रहे थे। उनका अज़्म और हौसला बढ़ा रहे थे। अल्लाह पर भरोसा और ग़ैबी मदद का यक़ीन दिला रहे थे। उसके साथ बोडिया रियासत के आख़िरी राजा रतन अमूल सिंह मुसलमानों की मदद कर रहे थे। वह क़त्ल व लूटपाट पर आमादा जुनूनी और शरारती तत्वों के सामने सीना तानकर खड़े हो गए थे और उनके ख़ौफ़नाक इरादों के आगे शीशा पिलायी दीवार बन गए थे। बोडिया के हज़ारों मुसलमानों को उन्होंने अपने क़िले में पनाह दी। उनको कैम्पों में रखा। यही वजह है कि यह मुसलमान शरणार्थी ख़ुदा के बाद अगर किसी पर भरोसा करते थे तो वह राजा रतन अमोल सिंह थे। जिसका अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि बोडिया के मुसलमानों को पाकिस्तान ले जाने के लिए जो विशेष ट्रेन भेजी गयी थी मुसलमान उसमें सवार नहीं हुए और एक कथन के अनुसार वह ट्रेन चार दिन तक बोडिया

के मुसलमानों को ले जाने का इन्तिज़ार करने के बाद वापस ख़ाली लौट गयी थी। लेकिन मुसलमानों दृढ़ता में कोई कमी नहीं आयी।

सत्ता प्राप्ति के लिए फ़िल्ना–फ़साद: राजा रतन अमोल सिंह जैसे बहुत से इन्सान थे जिन्होंने अपनी जानों पर खेलकर पीड़ित हिन्दुओं और मुसलमानों की मदद की। उनको सुरक्षित शरण उपलब्ध करायीं और उनकी जानों की हिफ़ाज़त की, लेकिन संघ परिवार ने अंग्रेजों की पॉलिसी पर अमल करते हुए हिन्दुत्व और हिन्दु राष्ट्र का राग अलापा। उसने भारतीय परंपरा को भुला दिया जो मुस्लिम शासकों ने अपने शासनकाल में उदारवादी पॉलिसी के तहत क़ायम की थी। मौजूदा वक़्त में संघ परिवार ने तरक्क़ी और ख़ुशहाली का ख़्वाब दिखाकर हुकूमत पर क़ब्ज़ा किया। बज़ाहिर पूरी हुकूमती मशीनरी संघ परिवार के सुर में सुर मिला रही है। हुकूमत की ओर से अमनल तरक़्क़ी और ख़ुशहाली का कोई काम न हो सका बल्कि देश की अर्थव्यवस्था हुकूमत की अदूरदर्शिता की वजह से अस्त–व्यस्त हो गयी। अवाम कंगाल होने लगे। नोटबन्दी का फ़ैसला और जीएसटी का लागू करना हुकूमत के गले की हड्डी बन गयी कि न निगलते बनता है और न उगलते।

अब ख़ुद एनडीए के अन्दर से बग़ावत की आवाज़ें आने लगी हैं। एक बार फिर अपनी नाकामियों को छिपाने की ख़ातिर मुल्क में नफ़रत का बीज बोया जा रहा है। लॉ एंड आर्डर की धज्जियां उड़ रही है। भाई को भाई से लड़ाया जा रहा है। जमीनी मसलों से जनता का ध्यान हटाकर भावनात्मक मामलों में जनता को उलझाया जा रहा है। रद्दे अमल की आड़ में नस्लकुशी को जाएज़ ठहराया जा रहा है और बेबसों को धमकियां दी जा रही हैं।

बावर्ची ख़ाने में झांककर देखा जा रहा है कि कोई गाय का गोश्त तो नहीं खा रहा है। महज़ शक व शुब्हे की बिना पर मुहम्मद अख़लाक़ नामी शख़्स को बेबर्दी के साथ पीट–पीट कर मार दिया गया। नवयुवक हाफ़िज़ जुनैद को महज़ इसलिए मार दिया गया कि वह मुसलमान है। माहौल ऐसा बना दिया गया कि गायो का पालना, ख़रीद–बिक्री करना बल्कि उनके क़रीब से गुज़रना भी मुसलमान के लिए नामुमकिन हो गया है। मुसलमान को मसलों में उलझाकर उनकी ज़िन्दगी को कठिन बनाना नकारात्मक तत्वों की व्यस्तता है।

बुद्धिजीवियों की चिन्ता: देश के ऐसे चिन्ताजनक हालात में भी आपसी अमन व शांति को जिलाने वाली मिसालें मौजूद हैं। जो दोनों फ़िरक़ों के भले और दूरअंदेश लोगों के लिए खुशी व इत्मिनान का कारण हैं। नकारात्मक भावनाओं को भड़काने की कोशिश के बावजूद इन्सानी दर्दमन्दी, हमदर्दी, सुहानुभूति के ध्वजवाहक मौजूद हैं। समस्याओं को आपसी सहयोग से हल करने का रुझान आज भी हिन्दु–मुसलमान दोनों में पाया जाता है। उसका असर पत्रकारों तथा लेखकों के लेखों में नज़र आता हैं। पिछले दिनों गौरी लंकेश को इसलिए क़त्ल किया गया कि वह नकारात्मक रुझानों पर आलोचनात्मक लेख लिखा करती थीं। कुलदीप नैयर पत्रकार थे और नकारात्मक प्रोपगन्डे के विरोधी थे। पिछले दिनों बीफ़ का मसला समाज को बांटने की कोशिश के शीर्षक से लेख लिखकर उन लोगों को आइना दिखाया। नैयर ने लिखा:

"किसी समय आरएसएस के प्रचारक रहने वाले मोदी को दिल्ली के क़रीब दादरी में होने वाले साम्प्रदायिक हिंसा से सबक़ लेना चाहिए। एक मुसलमान को इस अफ़वाह की बुनियाद पर बेदर्दी से मार दिया गया कि वह बीफ़ अपने इस्तेमाल में लाया था। अगर ऐसा हुआ भी तो बीफ़ के इस्तेमाल की मनाही का कोई क़ानून नहीं है। यह सच है कि दो या तीन रियासतों को छोड़कर हर एक ने गाय के ज़िबह पर पाबन्दी लगा रखी है लेकिन बीफ़ के इस्तेमाल पर तो अक्सर जगहों पर पाबन्दी नहीं है। अगर अभी तक नहीं किया है तो मोदी को यह महसूस करना चाहिये कि विविधता समाज का स्वभाव है। यद्यपि आरएसएस के बहुत से चरमपंथियों को यह नापसंद है लेकिन एक

बड़ी संख्या भारत की भावना में यक़ीन रखती है। और यह हिन्दुस्तान डेमोक्रेसी, लोकतन्त्र और धर्मनिरपेक्षता से गढ़ा गया है। इसमें शक नहीं कि मुल्क के बहुतेरे हिस्से ऐसे हैं जहां बहुसंख्यक बेलगाम होकर जो चाहे कह देती है और विविधता की निंदा करती है। लेकिन यह सामूहिक रूप से देश के लोगों पर नहीं लागू होगा। उन्हें अल्पसंख्यकों की राय की आज़ादी पर पूरा यक़ीन है और वह इसका बचाव करेंगे।

बुज़ुर्ग पत्रकार कुलदीप नैयर ने अपने इसी लेख में लिखा है:

"मुल्क के मामलात में मुसलमानों की कोई अहमियत नही है। मरकज़ी काबीना ही की मिसाल लीजिए, जिसमें सिर्फ़ एक नशिश्त मुसलमानों को दी गयी और उसकी भी हैसियत बड़ी मामूली है। इससे बदतर बात यह है कि दोनों फ़िरक़ो के बीच फ़ासला बढ़ता ही गया है। उनके बीच शायद ही समाजी मेल–जोल हो। दोनों ही को लगता है कि वह अपनी–अपनी अलग दुनियाओं में रहते हैं। उनकी बुनियादें वजहे वह इरतिकाज़ है जिसकी जड़े गहरी होती जा रही हैं। और जिसकी आबेयारी संघ परिवार दीदाए व दानिस्ता कर रहा है। इस नुक़्ते को चन्द अदबी शख़्सियात ने अकादमिक इनामात को लौटाकर उठाया है। इनमें जवाहर लाल नेहरू की भांजी नैन तारा सहगल भी शामिल हैं। उन्होंने इस नुक्ताए नज़र का इज़हार किया है कि आज़ादी–ए–इज़हार का दायरा दिन पर दिन तंग होता जा रहा है। अदबी शख़्सियात वाक़ई मुल्क की जम्हूरी फ़िज़ा की नुमाइन्दा हैं। बीजेपी की तरफ़ से मुसल्लत की जाने की वाली भगवाकारी इस मुआशरे के लिए काबिले कुबूल नहीं हो सकती। जिसकी परवाख़्त आज़ादाना इज़्हार तकसीरियत के साए में हुई हो। अफ़सोस यह है कि आर एस एस और बीजेपी के लीडरों ने इस बुनियादी हक़ीक़त को आजतक नहीं समझा।"

कुलदीप नैय्यर ने शिवसेना पर भी तन्क़ीद की, लिखते हैं:

"अस्ल हक़ीक़त यह है कि हिन्दुस्तान इन्तिहा पसंदों के एक हल्क़े ने इन्तिख़ाबी मक़ासिद से मुआशरे को मुरतकिज़ करने के लिए बीफ़ को मसला बनाया है। इसी तरह एक हिन्दु इन्तिहा पसंद तन्ज़ीम ने भी जो महाराष्ट्र तक ही महदूद है, इस रियासत को बदनाम किया है। वह शिवसेना है। जिसने सिर्फ़ हिन्दुस्तान के जम्हूरी ढांचे को दाग़दार किया है बल्कि उसके चेहरे पर कालिख़ पोत दिया है। शिवसेना के बानी बाल ठाकरे तशद्दुद की नामाकूलियत का एतराफ़ करते हुए उसकी मज़म्मत करने लगे थे, उससे शिवसेना को कुबूलियत का दर्जा पाने में मदद मिली और वज़ीरे आला के मन्सब पर उसके नामज़द फ़र्द को बिठाया गया। उसके बावजूद जम्हूरी तरीक़ेकार शिवसेना की नई नस्ल की पसंद पर पूरा नहीं उतर रहा है। बीजेपी नवाज़ रुझान रखने वाले मशहूर सहाफ़ी सुधीन्द्र कुलकर्णी के चेहरे पर स्याही मलने का वाक़्या शिवसेना के तरीक़े कार की मौजूदा मिसाल है। इस वाक़्ये के ख़िलाफ़ इहतिजाज और तन्क़ीदें शिवसेना के लिए यह पैग़ाम है कि हिन्दुस्तान की रूह जम्हूरी है और जम्हूरी रहेगी।

मुल्क में बढ़ती हुई अदमे रवादारी और बेइत्मिनानी की वजह मुल्के के चोटी के दानिशवरों और अरबाबे क़लम का आला हुकूमती ऐज़ाज़ात का लौटाना कोई मामूली बात नहीं बल्कि यह इस बात का सुबूत है कि हिन्दुस्तान में रहने वाला दानिशवरों का बड़ा तबक़ा रवादारी, तहम्मुल और अमन व अमान का क़ाएल है, वह चाहते हैं कि हिन्दु–मुसलमान मिलजुल कर मुल्क की तामीर व तरक़्क़ी में हिस्सा बटाएं। इस मसले की अहमियत पर रोशनी डालते हुए हफ़्ता रोज़ा आलमी सहारा ने लिखा है:

"अगर आदमी किसी मसले पर इज़हारे ख़्याल करता है तो उसे अहमियत नहीं दी जाती और यह ज़रूरी भी नहीं। इसलिए आम तौर पर यह समझा जाता है कि आम आदमी का शऊर इस हद तक हस्सास और मामला फ़हम नहीं होता है कि हर मसले और मामले में उसकी राय को तवज्जो दी जाए या उसके मुताबिक़ अमली एक़दाम किया जाए, लेकिन

जब किसी मुआशरे और मुल्क के नाबग़ा अफ़राद, जिनकी दानिश व बेनिश और फ़िक्री शऊर को एक बहुत बड़े तबक़े की ताईद व तहसीन हासिल हो और जिनकी तहरीर व तक़रीर रुझान साज़ मानी जाती हो, वह अगर किसी मसले पर इज़हारे ख़्याल करें तो या किसी मसले पर अपनी तश्वीश और अंदेशे को ज़ाहिर करें तो इसका मतलब यह है कि वह मामला वाक़ई में संगीन और क़ाबिले तवज्जो है। अगर पिछले दो महीनों से हिन्दुस्तान के उदबा व दानिशवराने मुल्क में बढ़ती बेचैनी और बेइत्मिनानी पर अपनी नाराज़गी जता रहे हैं और एहतिजाजन अपने ऐज़ाज़ात लौटा रहे हैं तो इसका साफ़ मतलब यही है कि हमारे देश में सही मानों में फ़िरक़ा वाराना हमआहंगी का माहौल पहले के मुक़ाबले में बिगड़ा हुआ है और उसकी मिसालें भी हमारे सामने लगातार आ रही हैं। बक़राईद के मौक़े पर यूपी के दादरी में गाय का गोश्त खाने की महज़ अफ़वाह पर एक भीड़ एक बेकुसूर इन्सान को मार–मार कर मौत के मुंह में ढकेल देती है। हरियाणा में दलित बच्चे को जला दिया जाता है। इज़हारे ख़्याल पर रोक लगाने की कोशिश की जाती है और अदीबों पर जानलेवा हमले किए जाते हैं। यह सब क्या हैं?फ़िरकावाराना अदमे रवादारी की मिसालें ही तो हैं।''

अति राष्ट्रवाद का दृढ़ संकल्पः इस्लाम की तालीमे मसावात के ज़ेरे असर अब समाज के निचले तबक़े के लोगों को भी इन्सान समझा जाता है और उनके हक़ की बात की जा रही है। लोगों को हिन्दुस्तान में इस्लामी तहज़ीब की देन का भी क़ाएल होना चाहिए। दस्तूरे हिन्द अपने मग़्रिबी क़ालिब के बावजूद बहुत सी मुसबत क़दरों की ताईद करता है। रवादारी की बदौलत ही कसीरुल मज़ाहिब, कसीरुस्सान, हिन्दुस्तान अमन व अमान व शराफ़त व इन्साफ़ का गहवारा रहा है। प्रोफ़ेसर यूसुफ़ अमीन ने लिखा है हर मज़हबी तहज़ीब में एक उन्सुर तहरीफ़ तन्सीख़ का भी रखती है। मुल्की की फुस्ताई तहरीक का रुझान हिन्दु मज़हब के मस्ख़ शुदा पहलू यानि ब्रहमणी आला तबक़े की जारहियत से इबारत है। इनको हिन्दु मत की आसमानी हक़ीक़त से कम ही ताल्लुक़ है। मज़ीदे बरां इन तहरीकात ने अपने जबाराना दाइया के लिए नज़रियाती क़ालिब मग़्रिबी माद्दा परस्ताना जदीदियत के फुस्ताई मकतब से हासिल किया है। यानि ग़ालिब गिरोह की जब्बारियत आर एस एस के नज़रियाती मेअमार गोलवरकर ने इस इस्तेफ़ादा का सरीह हवाला भी दिया है। आर एस एस की जब्बारियत का दूसरा पहलू तहज़ीबी है जो क़दीम हिन्दु उलूम की मनगढंत ताबीरात का तसल्लुत है। सियासी और मुआशरती पहलू के एतबाार से यह जब्बारितय इस्लामी तहज़ीब के ख़ात्मे का मंसूबा है जबकि मआशी लिहाज़ से मक़ामी और आलमी सरमाया दारों की हिमायत पेशे नज़र है। जो हिन्दुस्तानी अवाम किसान, मजूदर छोटे ताजिर और सिनअत कार का इस्तहसाल करना चाहते हैं।

आर एस एस का तीसरा दावा हिन्दुओं को वाहिद हिन्दुस्तानी वसाबित करने का है। इनका कहना है कि इस्लामी तहज़ीब और मिल्लते इस्लामिया का हिन्दुस्तान से न कोई कुदरती ताल्लुक़ है और न इस पर मुसलमानों का कोई हक़ है। मज़ीद यह कि तमाम बाशिंदगाने मुल्क सिख, बौद्ध, जैन, दलित आदिवासी इत्यादि हिन्दु हैं।

इन तहरीक का चौथा उन्सुर उनका जदीदी नज़रिया यहह कि हिन्दु समाज की तजदीद रूहानियत अख़लाक़, इल्म तमाम चीज़ों को नज़रअंदाज़ करके सिर्फ़ जंगी ताक़त और डिसिपलिन को अहमियत देती है।

पांचवा उन्सुर यह है कि तरीक़–ए–कार के तौर पर तशद्दुद को कलीदी मक़ाम दिया गया है। यह मुक़द्दस जंग (धर्मयुद्ध) का पाबन्द हद व तशद्दुद नहीं है बल्कि बदनाम ज़माना फुस्ताई बंगाली नाविल ''आनंदमठ'' में बयानशुदा शैतानी भीड़ का तशद्दुद है जो लूटपाट और औरतों पर मज़ालिम से इबारत है। फुस्ताई तहरीक हक़ीकी हिन्दु मज़हब की रूहानियत और इन्सान दोस्ती नीज़ मौजूदा दस्तूर हिन्द की रौशन ख़्याली के ख़ात्मे कक लिए भी इसी क़द्र

कोशिा है जितना कि मुसलमानों के मज़हब और मुआशरती और मआशी निज़ाम के ख़ात्मे के लिए। मज़ीद बरां अवामुन्नास का बदतरीन मआशी इस्तहसाल और हिन्दुओं का अख़लाक़ी और अक़्ली इन्हितात भी उसके मुमकिना अवाक़िब में शामिल है।

प्रोफ़ेसर यूसुफ़ अमीन ने बिरादराने वतन से अपील की है कि वह अपने अस्ली मज़हब और अज़ीम विरासत की हिफ़ाज़त की ख़ातिर आगे आएं। उनको फुस्ताई तहरीकात के आगे बन्द बांधना चाहिए ताकि इन ताक़तों को मुल्क में फलने–फूलने का मौक़ा मयस्सर न आ सके। प्रोफ़ेसर साहब लिखते हैं उन सत्तर फ़ीसद हिन्दुस्तानिया को अज़ीम और असासी बरबादी को रोकने के लिए मैदान में उतरना चाहिए जिन्होंने पिछले चुनावों में बीजेपी के ख़िलाफ़ वोट दिया था बल्कि आर एस एस के बहकावे में आने वाले तीस फ़ीसद हामियों को भी अपने रवैये के ख़ौफ़नाक मज़म्मरात को समझकर इन्सानियत, ईज़ाबियत और रूहानितय के तहफफुज़ की तरफ़ रुजू करना चाहिए। ख़ुद आर एस एस को अपने नज़रियात का जाएज़ा लेकर हक़ीक़ी हिन्दु मज़हब और उसकी इफ़ताद से मुतज़ाद और रूहानी व तहज़ीबी लिहाज़से तबाहकुन ख़्यालात पॉलिसियों और रवैये को तर्क करना चाहिए और रवायती इन्सान दोस्ताना इफ़ताद की तरफ़ वापस आना चाहिए।

जारिहियत के वसाएलः संघ परिवार और उसकी शाखों का अपने अज़ाएम की तकमील की ख़ातिर कारगर वसीला बहीमाना तशद्दुद है। इस तहरीक ने तशद्दुद के इस्तेमाल को बुनियादी अहमियत दी है। संघ परिवार ने इस वसीले को मग़्रिबी फुस्ताइयत से मुस्तआर लिया है। जिसने तशद्दुद को सराहत के साथ क़ौमी तरक़्क़ी का ज़रिया और वसीला क़रार दिया। संघ परिवार का फ़लसफ़ा मुल्क के लिए ख़तरनाक है। मग़्रिबी माद्दी जदीदियत ने ख़ुदा फ़रामोशी पैदा की है। सरमाया दारी के नतीजे में लोग देहात से शहर की इन्सानियत कुश गन्दी बस्तियों में रहाइश के लिए आने को मजबूर हैं। उनका एक बड़ा तबक़ा हैवानी तशद्दुद की आग में सुलग रहा है। मुन्ज़िम जराएम, दुल्हन सोज़ी, आबरूरेज़ी, शाहराही ग़ैज़ व गज़ब के यह तमाम भयानक हालात इसी अन्दरूनी जज्बा तशद्दुद की देन है। आर एस एस का ग़रीब तकबे में इस हिंसा को मुसलमानों और इन्सानियत नवाज़ ग़ैर मुस्लिमाकें के ख़िलाफ़ हवा देना और मतूसत तबक़े में फैलाना आग से खेलना है। इस आग का शिकार सिर्फ़ मुसलमान नहीं बनेंगे बल्कि दुल्हन सोज़ी और आबरूरेज़ी वग़ैरह की उठती लहर एक सुनामी बन जाएगी।

फुस्ताई तहरीक का एक और वसीला शदीद मआशी इस्तहसाल के साथ माशी हुकूक़ की पासदारी का ढोंग है। जिससे मुल्क अभी दो–चार है, मुल्क के मआशी हालत बद से बदतर होती जा रही है। छोटे कारोबारी और कारखाने वाले अपना कारोबार बन्द कर चुके हैं। पूरा मुल्क बड़े कारोबारियों के हाथ में जाता हुआ नज़र आता है। मगर हुकूमत अवाम को महज़ बहलावे दे रही है कि अभी कुछ दिनों की परेशानी है हालात अच्छे हो जाएंगे। प्रोफ़ैसर यूसुफ़ अमीन ने संघ परिवार के इस तरीक़ेकार पर तन्कीदी बात करते हुए लिखा है फ़िस्ताई तहरीक का एक मनफ़ी पहलू उसकी माशी पॉलिसी है। आलमी और हिन्दुस्तानी सरमाया दारों के ज़रिये अवामुन्नास का सफ़ाकाना इस्तहसाल किया जा रहा है। दूसरी तरफ़ भारतीय मज़दूर संघ स्वदेशी जागरया मंच वग़ैरह ग़रीबों से हमदर्दी का ढोंग रचाती है। यह आर एस एस की मआशी पॉलिसी की दो बुनियादें हैं। फिस्ताई तहरीक के ग़ैर दयानतदाराना तर्ज़े गुफ़्तार, झूठ, तौरिया वग़ैरह की वजह से उसके किसी मौक़िफ़ को कतई तौर पर बयान करना मुश्किल है लेकिन यह बात तय है कि आलमी और मक़ामी सरमायादारो के तहालिफ़ को इस्तहसाल को पूरा मौक़ा फ़राहम करना ही फिस्ताई तहरीक की अस्ल मआशी पॉलिसी है।

इन हालात में मुसलमानों की ज़िम्मेदारी बढ़ जाती है। अल्लाह तआला ने इनको शऊर बख़्शा है। ख़ैर उम्मत के मर्तबे पर फ़ाएज़ किया है। वह अपने

अन्दरूनी और बैरूनी मसाएल को समझक्श्र फुस्ताइयत के बढ़ते हुए सैलाब को रोक सकते है। इनको अपना ताल्लुक़ मज़हब से मज़बूत करके ताल्लुक़ बिल अल्लाह और ताल्लुक़ बिर्रसूल का अमली नमूना पेश करना होगा। इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़ की मिसाल क़ायम करके बनियाने मरसूस की जीती जागती तस्वीर पेश करनी होगी। इन्सानी ख़िदमत को अपनाकर अमलन साबित करना होगा कि हम सिर्फ़ मुल्क के ख़ैरख़्वाह ही नही बल्कि यहां की आबादी के लिए मुफ़ीद और कारामद हैं। आला अख़लाक़ व किरदार से दुश्मन भी दोस्त बन जाता है। कुरआन पाक ने नबी करीम सअ00 काके ख़िताब करके फ़रमाया कि : "और ऐ नबी नेकी और बदी एक जैसी नही है। तुम बदी को इस नेकी से दफ़ा करो जो बेहतरीन हो। तुम देखोगे कि तुम्हारे साथ जिसकी अदावत पड़ी हुई थी वह जिगरी दोस्त बन गया।

बिरादराने वतन तक दीने हक़ का पैग़ाम पहुंचाने की ज़िम्मेदारी मुसलमानों की है। वह इन्सानियत के ख़ैरख़्वाह हैं। उनकी आरज़ू है कि इस दुनिया के बाद आने वाली दुनिया में इन्सान को ख़सरान से साबिक़ा पेश न आए। और वह अल्लाह के अज़ाब का मुस्तहिक़ न क़रार पाए। बिरादराने वतन को यह बात समझानी है कि संघ परिवार हिन्दु मज़हब की सेहतमंद रिवायत की तरजुमानी नहीं करता। वह मग़रिब ज़दा माद्दा परस्ताना तसव्वुरात का तरजुमान है। इसलिए हिन्दु समाज को संघ परिवार को सरीह और क़तई बराअत का इज़हार करना च ाहिए। अवाम को मुतालबा करना चाहिए कि संघ परिवार की जब्बरियत इस्लामी तहज़ीब की मुख़ालिफ़त और अवामुन्नास के मआशी इस्तहसाल से बाज़ आएं। हिन्दु समाज की दैरीना रवादारी और उमूमी इन्सानी शराफ़त का तक़ाज़ा यही है। इलाही तालीमात को बुनियाद बनाकर हम मुल्क में एक ऐसी फ़िज़ा को जन्म दे सकते हैं जहां तमाम अक़वाम रवादारी और अमन व अमान के साथ ज़िन्दगी गुज़ारें और मुल्म की तामीर व तरक़्क़ी में नुमायां किरदार अदा करें।

शेषः मीडिया तथा मुसलमान

.....उन्होने कहा कि थोड़ा सा जो इम्तिहान है उस इम्तिहान में तकलीफ़ ज़रूर पहुंच रही है लेकिन इसके जो नतीजे हैं वो बहुत ही खुश करने वाले हैं। वो बहुत आशावादी थे। उन्होने ये भी कहा कि ढ़ाई तीन हज़ार आदमी इस समय अमरीका की विभिन्न जेलों में हैं लेकिन हमें ये भी देखना चाहिये कि खुद मुस्लिम देशों में क्या हो रहा है?उससे अधिक बड़ी संख्या जेलों में है और इस्लामी काम की राहों में वहां के शासन की ओर से अधिक रुकावटें पैदा की जा रहीं हैं। उन्होने बताया कि मिस्र में बीस हज़ार आदमी जेलों में है। यही हाल त्यूनिस, सीरिया और ईराक़ का है। लेकिन जो लोग जेल में हैं उनके हौसले बुलन्द हैं। जेल की तकलीफ़ काटने के बाद जब निकलते हैं तो उनके इरादे वैसे ही मज़बूत होते हैं। उनकी ख़बरें प्रेस में आती रहती हैं। मिस्र में जो इख़्वानी या इस्लामी ज़हन रखने वाले पकड़े जाते हैं उनको कष्ट पहुंचाया जाता है। टार्चर होने के बाद जब वो जेल से बाहर निकलते हैं तो वो उन लोगों से ज़्यादा मज़बूत होते हैं जो इस इम्तिहान से नहीं गुज़रे। इसका अनुभव हमकों खुद मिस्र के एक सफ़र में हुआ। एक ऐसे ही व्यक्ति से मुलाक़ात हुई जो कई साल जेल में रहा। उस पर उसके प्रभाव थे। वो बहुत तकलीफ़ में था। इसके बाद भी वो खुलकर अपने जज़्बात को ज़ाहिर कर रहा था और शासन की निंदा कर रहा था। हमने कहा कि अब आपको इहतियात करनी चाहिये, उसने कहा कि हमारे साथ जो हो चुका है अब उससे ज़्यादा क्या होगा?वो हमारा अब और क्या करेंगे? प्रेस में भी ये सब चीज़ें आती रहती हैं, ऐसे लोगों के हालात व जज़्बात छपते रहते हैं और ये जज़्बा व कुर्बानी जिसके बारे में प्रेस या दूसरे साधनों से पता चलता है, इस्लाम की ओर आकर्षित करने का साधन बनता है। इस भाव के उत्पन्न करने में पक्षपाती मीडिया या शासन के रवैये का भी हाथ है और इस्लामी मीडिया का भी, चाहे वो किताब की शक्ल में हो, या अख़बार और रेडियो की शक्ल में। चाहे वो कितना ही छोटा क्यों न हो उसे हर मैदान में अपना कुछ न कुछ अस्तित्व स्वीकार करना है। और कम साधनों के बावजूद उसके परिणाम प्रकट हो रहे हैं, वो परिणाम अत्यधिक आशावादी हैं।

दम तोड़ता लोकतन्त्र

मौलाना मुहम्मद आज़म

इस्लाम और पश्चिम में अन्तर ये नहीं है कि पश्चिम लोकतन्त्र का क़ायल है और इस्लाम ख़िलाफ़त का। बल्कि इस पहलू से अन्तर ये है कि इस्लाम और अस्ल और अच्छे लोकतन्त्र का मानने वाला है। वास्तविकता ये है कि इस्लाम ही सच्चे लोकतन्त्र का नींव रखने वाला है। यदि इस्लाम का अस्तित्व न होता तो दुनिया कभी लोकतन्त्र से परिचित न हो पाती। इस्लाम के आने के पहले और इस्लाम के आने के बाद यदि इस्लाम के इतिहास का बिना पक्षपात के अध्ययन किया जाये तो ये बात साफ़ हो जायेगी कि इस्लाम के उदय व अधिपत्य के बाद ही ये सम्भव हुआ कि दुनिया लोकतन्त्र से परिचित हुई। ये इस्लाम ही है जिसने धीरे–धीरे वर्गों में लोकतान्त्रिक मूल्यों को बढ़ावा दिया। इस्लाम से पहले सत्ता में जनता की भागीदारी का विचार भी न था। इस्लाम ने दुनिया के इतिहास में पहली बार ऐलान किया: (और उनके मामले आपसी मशवरों से तय किये जाते हैं)

रसूलुल्लाह स0अ0 कुरआन की इस आयत पर भरपूर कार्यरत थे। इसीलिये आप स0अ0 राज्य के राजनीतिक व सुरक्षा के मामलों में लोगों की राय लेते और आप स0अ0 पूरी जनता को मामले को तय करने में शामिल करते थे। आप स0अ0 की मजलिस में हर व्यक्ति को ये अधिकार था कि वो पहुंचे और अपनी बात रखे। रसूलुल्लाह स0अ0 ऐसा नहीं करते थे कि आप ने देश के मामलों को केवल कुछ मंत्रियों और अधिकारियों के सुपुर्द कर दिया हो। आप स0अ0 की मजलिस में हर व्यक्ति को ये अधिकार था कि वो पहुंचे और अपनी राय रखे। अलबिदाया वन्निहाया में वो वाक़्या बहुत प्रसिद्ध है कि जब रसूलुल्लाह स0अ0 बदर के युद्ध के अवसर पर बदर के निकट पहुंचे और आप स0अ0 ने एक कुंवे के पास पड़ाव किया। उस समय एक व्यक्ति आप स0अ0 के पास आये और उन्होंने आप स0अ0 के इस निर्णय पर असहमति प्रकट की और एक नये पड़ाव की राय दी। आप स0अ0 ने उस व्यक्ति की राय को स्वीकार किया और अपने फ़ैसले को बदल दिया।

इस बात से पता चलता है कि आप स0अ0 के दौर में एक आम इन्सान को भी रणनीति जैसे नाज़ुक मसले में भी सीधे पैग़म्बर स0अ0 से खुली बातचीत करने का हक़ हासिल था। लोकतन्त्र का इससे बड़ा उदाहरण क्या होगा?क्या सत्ता में सम्मिलन का इससे बड़ा नमूना कहीं प्रस्तुत किया जा सकता है।

नबी करीम स0अ0 देश की समस्याओं और कामों में अपनी जनता को पूरी तरह से सम्मिलित रखते थे। आप स0अ0 लोगों से उनकी राय मांगते, उनके रूझानों को जानते और उनका तजज़िया करते थे। इस काम के लिये आप स0अ0 खुला जलसा भी करते थे और लोगों से राय भी मांगते थे। इसीलिये आप स0अ0 ने ख़न्दक़ की जंग के मौक़े पर लोगों को जमा फ़रमाया और उनसे सलाह ली। हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि0 ने ख़न्दक़ खोदने का उपाय दिया। रसूलुल्लाह स0अ0 ने आप रज़ि0 की इस सलाह को कुबूल किया। रसूलुल्लाह स0अ0 बावजूद यका रियासत के सरबराह (Head Of the State) थे। आप स0अ0 लोगों के साथ इस तरह रहते थे कि अजनबी आदमी को पूछना पड़ता था कि तुममें मुहम्मद कौन है? आप स0अ0 के इस रवैये से लोग समझते कि देश का सरबराह उन्हीं में से एक है। आप स0अ0 ने न कभी अपने लिये महल बनाया और न ऐश व ऐश्वर्य की चीज़ों को अपनाया। इसी प्रकार आप स0अ0 ने दुनिया के इतिहास में पहली बार ये विचार दिया कि राजकोष किसी राजा की सम्पत्ति नहीं है बल्कि अल्लाह की अमानत है। जो अल्लाह के बन्दों का हक़ है। जो अल्लाह के बन्दों को ही मिलना चाहिये। आप स0अ0 के इस तरीक़े की ज़िन्दगी ने एक मिसाल पैदा कर दी। लोग आप स0अ0 की पाक ज़िन्दगी का हवाला देकर अपने शासक होने की आशा करने लगे। आप स0अ0 ने न्यायपसंद शासको को फ़ज़ीलतें सुनाई, इससे इतिहास पर एक न्यायप्रिय शासन श्रनेज त्नसम का एक नया विचार पैदा हुआ। रसूलुल्लाह स0अ0 ने फ़रमाया:

(तुममें से हर एक से अपने अधीनों के बारे में सवाल किया जायेगा)

मानों कि आप स0अ0 ने शासन को एक प्रकार की ज़िम्मेदारी बना दी जबकि इससे पहले शासन ख़बर और बेलगामी बनी हुई थी।

A Government for the people, by the people, of the people.

आप स0अ0 ने इतिहास पर अत्यधिक प्रभाव छोड़े,

यहां तक कि एक चिन्तक को कहना पड़ा:

Muhammad overthrew the traditional system of the globe.

यानि मुहम्मद स0अ0 ने दुनिया की रिवायती व्यवस्था को बदल डाला

यानि मुहम्मद स0अ0 दुनिया के सबसे कामयाब व्यक्ति थे।

प्रशासनिक व्यवस्था के पहलू से भी ये शब्द पूरी तरह ठीक हैं। आप स0अ0 ने बहुत ही कामयाब तौर पर ख़िलाफ़त को जिम्मेदारी से बदला और वास्तविक लोकतन्त्र का श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत किया।

रसूलुल्लाह स0अ0 ने फ़रमाया:

(ऐ अल्लाह! मैं गवाही देता हूं कि सारे बन्दे आपस में भाई–भाई हैं)

आप स0अ0 ने सभी इन्सानों को भाई–भाई घोषित करने की श्रेष्ठ लोकतान्त्रिक भावना प्रस्तुत की है। मीसाक़े मदीना आप स0अ0 के वास्तविक लोकतन्त्र का एक श्रेष्ठ नमूना है। आप स0अ0 ने गुलामों के साथ बेहतर व्यवहारक करने की शिक्षा देकर लोकतान्त्रिक विचारों को बल दिया। आप स0अ0 ने औरतों के साथ अच्छे व्यवहार की शिक्षा और उनके अधिकारों की पूर्ति पर बल दिया। आप स0अ0 के आदेशों के परिणामस्वरूप ही दुनिया में बराबरी के विचार को बढ़ावा मिला और वर्तमान लोकतन्त्र की राह हमवार हुई।

आप स0अ0 की वफ़ात के बाद भी मुसलमानों में आमरियत क़ायम नहीं हुई। इसीलिये हज़रत अबूबक्र रज़ि0 का चुनाव बहुत ही लोकतान्त्रिक रूप से हुआ। आप स0अ0 की वफ़ात के बाद बनू सादह में सहाबा किराम रज़ि0 की एक मीटिंग हुई जिसमें हज़रत अबूबक्र रज़ि0 के हाथ पर बैत की गयी। ये मीटिंग उस समय की एक संविधानिक सभा थी, जिसने हज़रत अबूबक्र रज़ि0 को ख़लीफ़ा चुना। हज़रत अबूबक्र रज़ि0 ने अपना उत्तराधिकारी चुनते समय अलग–अलग बहुत से सहाबा रज़ि0 से व्यक्तिगत राय ली। इस मामले में बहुत सी चर्चाएं हुईं और आख़िर में हज़रत उमर रज़ि0 का नाम बहुत ही लोकतान्त्रिक रूप से अस्तित्व में आया। मानो कि ये निर्णय अघोषित चुनाव समिति की सहमति के परिणाम में सामने आया। हज़रत उमर रज़ि0 ने अपनी वफ़ात से पहले एक चुनावी कौन्सिल का गठन किया, जिसने हज़रत उस्मान रज़ि0 को ख़लीफ़ा चुना। चारों ख़लीफ़ा का चुनाव इस्लामी संविधान की रोशनी में प्रकाश में हुआ।

रोशो पश्चिमी सभ्यता का एक बड़ा विचारक और लोकतन्त्र का प्रचारक माना जाता है। उसका एक वाक्य बहुत प्रसिद्ध है: "मनुष्य आज़ाद पैदा हुआ था लेकिन मैं उसे ज़ंजीरों की क़ैद में पाता।"

रोसो का ये वाक्य दुनिया में बहुत प्रचलित है। लेकिन वास्तविकता ये है कि ये रोसो का अपना बनाया हुआ अपना वाक्य नहीं है बल्कि हज़रत उमर रज़ि0 के एक जुम्ले से लिया गया है। हज़रत उमर रज़ि0 की ख़िलाफ़त के दौरान अम्र बिन आस रज़ि0 मिस्र के गवर्नर थे। इस दौरान मिस्र में एक रेस का आयोजन हुआ। इस दौड़ में मिस्र के गवर्नर के बेटे से आगे एक क़िब्ती निकल गया। गवर्नर के बेटे ने उस क़िब्ती को मारा और ज़बरदस्ती दौड़ से बाहर करने की कोशिश की। क़िब्ती इस बात पर बहुत नाराज़ हुआ और वो शिकायत लेकर हज़रत उमर रज़ि0 के पास मिस्र पहुंच गया। हज़रत उमर रज़ि0 ने शिकायत सुनकर गवर्नर और गवर्नर के बेटे दोनों को मदीना बुलाया। जब ये लोग मदीना आ गये तो हज़रत उमर रज़ि0 ने उस क़िब्ती के हाथ में कोड़ा दिया और कहा कि गवर्नर के उस लड़के को मारो जिसने तुम्हें मारा है। अतः उस क़िब्ती ने हज़रत अम्र बिन आस के बेटे को मारा। उस वक़्त हज़रत उमर रज़ि0 ने हज़रत अम्र बिन आस रज़ि0 को सम्बोधित करते हुए कहा था:

"ऐ अम्र बिन आस! तुमने लोगों को कब गुलाम बना लिया, हालांकि उनकी माओं ने उनको आज़ाद जना था।" (सीरतुस्सहाबा, अलबिदाया वन्निहाया)

इस्लाम में तानाशाही के लिये कोई जगह नहीं है बल्कि इस्लाम तो सच्चा लोकतान्त्रिक धर्म है। इस्लामिक लोकतन्त्र वर्तमान लोकतन्त्र से बहुत ही श्रेष्ठ है। इस्लामिक लोकतन्त्र एक आइडियल लोकतन्त्र है। आप स0अ0 ने अगर इस्लाम की ये आइडियल लोकतन्त्र न स्थापित की होती तो दुनिया को लोकतन्त्र का विचार कभी नहीं मिलता और लोग लोकतन्त्र के बारे में कभी सोच भी न सकते।

इस्लाम का लोकतन्त्र हर प्रकार के भ्रष्टाचार से पाक एक पवित्र व्यवस्था है जिसमें समानता व न्याय का बोलबाला है और जनता को उसके सभी अधिकार पूर्ण रूप से प्राप्त होते हैं। पश्चिम का लोकतन्त्र हमारे ऊपर कोई एहसान नहीं है उससे कहीं श्रेष्ठ लोकतन्त्र कुरआन व हदीस की शक्ल में हमारे पास सुरक्षित है।

नुबूव्वत के बाद रसूलुल्लाह (स0अ0) की आमदनी का ज़रिया

मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

नबी करीम (स0अ0) पैंतीस बरस तक व्यापार में अपनी पूरी क्षमता व योग्यता के साथ व्यस्त रहे और अपनी स्वभाविक स्वभाव के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारते रहे। लेकिन अस्ल मक़सद सिर्फ़ यह न था कि मक्का के आपसी झगड़ों में आप एक बेहतर हकम साबित हों या तिजारत (व्यापार) के मैदान में एक बेहतर साथी साबित हों या समाजी बुराइयों से दूर रहकर एक शरीफ़ इन्सान साबित हों। बल्कि आप (स0अ0) की ज़िन्दगी का अस्ल मक़सद इन्सानी दुनिया को हिदायत का सर्वव्यापी संदेश देना था और एक सर्वव्यापी शरीअत की बुनियाद डालनी थी और तौहीद की शमा जलानी थी। और यह अज़ीम ज़िम्मेदारी तमाम दुनियावी व्यस्तताओं से ऊपर उठकर थी। यही वजह है कि बेसत (नुबूव्वत मिलने) का ज़माना जितना क़रीब होता गया आप (स0अ0) की तबियत दुनियावी व्यस्तताओं से उचाट होने लगी और आपकी तबियत मक्का के जाहिली समाज में कुढ़ने लगी। इसीलिए आप (स0अ0) समाजी ज़िन्दगी से दूर रहने और अपना उठना–बैठना सिर्फ़ उसी सोसइटी तक महदूद कर ली जो बुत परस्ती से बेज़ार थी और एक मज़हबे हक़ की तलाश में थी। उन दिनों में आप (स0अ0) पर अजीब कैफ़ियात तारी रहती थी और आप (स0अ0) मुददतों ग़ार–ए– हिरा में तमाम मशग़िल से दूर होकर एकाग्रता के साथ मुराक़बा किए रहते थे और वापसी में तवाफ़े काबा करने के बाद घर तश्रीफ़ ले जाते थे। तलाशे हक़ की इस कैफ़ियत में आप (स0अ0) ने बहुत से ऐसे वाक़्यात का भी मुशाहिदा किया जो इस बात का इशारा दे रहे थे कि जल्द ही हिदायत की सही राह मिलने वाली है। इसीलिए रमज़ान के महीने में जब आप (स0अ0) ग़ारे हिरा में थे कि अचानक ख़ुदा तआला का एक फ़रिश्ता ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उसने सूरह इक़रा की इब्तिदाई आयात आपको याद करायीं। यह वाक़्या दरअस्ल मन्सबे रिसालत की तफ़वीज़ था जिसके पेश आने पर आप (स0अ0) बहुत बेचैनी की कैफ़ियत का शिकार हो गए और सीधे घर की राह ली। घर पहुंच कर हज़रत ख़दीजा ने आप (स0अ0) से इन्तिहाई तारीख़साज़ तसल्ली बख़्श कलिमात कहे और फिर धीरे धीरे आप (स0अ0) दीने बरहक़ की दावत में शबोरोज़ मशगूल हो गए और इस तरह ज़िन्दगी का एक नया दौर शुरू हो गया।

नुबूव्वत से पहले रसूलुल्लाह (स0अ0) की रूहानी जुस्तुजु और बेअसत के बाद आपकी इशाअते हक़ की राह में ग़ैर मामूली तड़प इस बात की कतअन इजाज़त नहीं देती थी कि आप (स0अ0) तिजारत से माज़ी की तरह शगफ़ रखें। और फिर हज़रत खदीजा रज़ि0 ने अपना तमाम माल व ज़र आपके हवाले कर दिया था, उसके बाद यूं भी उसकी ज़रूरत न थी कि आप (स0अ0) महज़ हुसूले ज़र की ख़ातिर अपनी तग व दू जारी रखें। ताहम बाज़ रिवायात की रोशनी में यह बात कही जा सकती है कि आप (स0अ0) ने बेअसत से चन्द साल पहले और बेअसत के बाद भी महदूद दायरे में तिजारती सिलसिला जारी रखा।

इब्ने कसीर की रिवायत है कि अबूसुफ़ियान बिन हरब एक बार शाम के तिजारती सफ़र पर गया, और वहां से वापस होकर यमन का रुख़ किया, फिर जब यमन से वापसी हुई तो वह तमाम लोग अबूसुफ़ियान से मुलाक़ात के लिए आना शुरू हो गए, जिन्होंने अपना माल तिजारत में लगा रखा था, ताकि वह अपना मुनाफ़ा हासिल कर सकें, उन्हीं वारिदीन में आप (स0अ0) भी थे। आप (स0अ0) अबूसुफ़ियान रज़ि0 के घर आए और दुआ सलाम किया। सफ़र के हाल अहवाल दरयाफ़्त किए और वापस चले गए। आप (स0अ0) के इस तर्ज़े अमल पर अबूसुफ़ियान को बड़ी हैरत हुई, और उसने अपनी बीवी से कहाः मुझे हैरत है कि मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने अपने सामाने तिजारत का तज़किरा तक नहीं किया और मेरी ख़ैरियत दरयाफ़्त करते ही चलता बना, जबकि इसमें कितने लोगों को हिस्सा मेरे साथ लगा हुआ था, उनमें से किसी ने मेरी ख़ैरियत तो मालूम न की, मगर अपना हिस्सा लेने की फ़िक्र ज़रूर दामनगीर रही, हिन्दा ने जवाब दियाः शायद तुम्हें अभी इल्म नहीं है कि उन्हें अपने रसूले ख़ुदा होने का दावा हो गया है। इसके बाद अबुसुफ़ियान ख़ानाए काबा गया और वहां तवाफ़ के दौरान हुज़ूर (स0अ0) से फ़िर मुलाक़ात हुई। इस बाद अबूसुफ़ियान ने बातचीत में पहल किया और कहाः तुम्हारे सामाने तिजारत में ख़ूब नफ़ा हुआ है, तो किसी को भिजवाकर अपना सामान मंगवा लो, और मैं तुमसे वह फ़ीसद भी नहीं लूंगा जो मैं अपनी क़ौम से लेता हूं।

आप (स0अ0) ने माले तिजारत को अबूसुफ़ियान की इस शर्त पर लेना मंजूर न किया तो अबूसुफ़ियान ने कहा

ठीक हैजो मैं अपनी क़ौम से वसूल करता हूं, तुम भी उतना दे देना, यह सुनकर रसूलुल्लाह (स0अ0) ने माले तिजारत अबूसुफ़ियान के घर से हासिल किया।

इस रिवायत से मालूम होता है कि आप (स0अ0) जिस ज़माने में राहे हक़ के मुतलाशी थे, उस ज़माने में अपना माले तिजारत कुरैश के तिजारती काफ़िलों में बतौर मुज़ारिबत रवाना फ़रमाते थे। आप (स0अ0) का यह मामूल बेसत के बाद भी बदस्तूर जारी रहा होगा, इसलिए कि आप (स0अ0) के अहले मक्का से आपसी मामलात हिजरत के वक़्त तक जारी रहे थे, जिसकी बड़ी दलील हिजतर के वक़्त का वह वाक़्या है, जिसमें ज़िक्र है कि अपनी पीछे हज़रत अली रज़ि0 को इसलिए छोड़ा था कि वह अहले मक्का की अमानते उन तक पहुंचा दें। ताहम इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता है कि जब आपकी मुख़ालिफ़त ने ज़ोर पकड़ा और अहले मक्का की ईज़ा रसानियां अपनी हदें पार करने लगीं तो आप की मईशत को भी जबरदस्त नुक़सान पहुंचा होगा और बहुत से ताजिरों ने आप (स0अ0) का माले तिजारत लेने से इनकार भी कर दिया होगा।

मदनी ज़िन्दगी में जहां आप (स0अ0) के दावती मिशन की राहें हमवार हुईं वहीं आप (स0अ0) के मआशी मसाएल भी हो गए और मुख़्तलिफ़ ज़राए से ज़रूरियाते ज़िनदगी पूरी होने का नज़्म हो गया। मदनी अहद की इब्तिदा में इब्ने साद का बयान है कि हज़राते अंसार बारी–बारी ख़ाने पीने का सामान पहुंचाने की सआदत हासिल करते। आप (स0अ0) इन हदाया को बख़ुशी क़ुबूल फ़रमाते और बक़द्र ज़रूरत इस्तेमाल के बाद जो बच जाता उसको फ़ुक़रा सहाबा में तक़सीम फ़रमा देते।

सही बुख़ारी में है कि आप (स0अ0) के पड़ोस में रहने वाले अंसार हर रोज़ आपके लिए ऊंटनियों का दूध और दीगर खाने पीने की अशया लाते थे और आप (स0अ0) अज़वाजे मुताहिरात को इनायत फ़रमा देते थे। यहां यह बात भी क़ाबिले ज़िक्र है कि आप (स0अ0) महज़ हज़रात अंसार के तहाएफ़ व हदाया पर ही क़ाने न रहे बल्कि आप स0अ0 ने ज़ाति तौर पर ज़रूरियात की तकमील के लिए बकरियां भी ख़रीदीं।

बिला ज़री की एक रिवायत से यह भी मालूम होता है कि आप (स0अ0) बसा औक़ात तलबे माश के लिए मदीना के बाज़ार भी तश्रीफ़ ले जाते थे, अगरचे यह एक या दो मर्तबे का इत्तिफ़ाक़ रहा हो। इसीलिए एक बार का वाक़्या है कि हज़रत उस्मा नरज़ि0 नबी अकरम (स0अ0) के घर हाज़िर हुए और हज़रत आयशा रज़ि0 से हुजूर (स0अ0) के बारे में मालूम किया। हज़रत आयशा रज़ि0 ने बताया कि घरवालों के लिए कुछ रोज़ी तलाश करने निकले हैं, इसलिए कि सात दिन से हमारे घर में चूल्हा तक नहीं जला है। हज़रत उस्मान रज़ि0 फ़ौरन घर वापस गए और कुछ खाना और एक बकरी हदिया में भेजी।

उसके बाद जब मदनी दौर में फ़ुतूहात का सिलसिला शुरू हुआ तो माले ग़नीमत का पांचवां हिस्सा अल्लाह तआला की तरफ़ से रसूलुल्लाह (स0अ0) का क़रार पाया। सही मुस्लिम में है कि अल्लाह तआला ने हमारी कमज़ोरी और बेबसी को मद्देनज़र रखते हुए हमारे लिए माले ग़नीमत को हलाल कर दिया।

इसके अलावा फदक और ख़ैबर वग़ैरह की आमदनी से आप (स0अ0) की मआशी ज़रूरियात का मुस्तक़िल हल हो गया था और मुख़्तलिफ़ बादशाहाने मुमलकत भी क़ीमती हदाया व तहाएफ़ भेजकर शर्फ़े नियाज़ हासिल करते रहते थे। नीज़ मुअर्रिख़ नामी यहूदी के भी सात बाग़ात आपकी ममलकत में आ गए थे जो उसने अपनी वफ़ात से पहले आपको हदिया किए थे गरचे इन बाग़ात को आप (स0अ0) ने वक़्फ़ कर दिया था।

सीरत के यह मआशी नुकूश तमाम इन्सानियत के लिए नमूना है लेकिन इन मआशी पहलुओं के पेशनज़र इस बात का इनकार दुरुस्त नहीं कि आप (स0अ0) की ज़िन्दगी ज़ाहिदाना न थी। आपकी ज़ाति ज़िन्दगी निहायत सादा, थोड़े से पर गुज़ारा करने वाली और ज़ाहिदाना व मुतकशफ़ाना थी, और आप (स0अ0) की यह हालत अख़्तियारी थी इसीलिए ताहयात अपनी ज़रूरतों पर दूसरों की ज़रूरतों को क़ुर्बान करना आपका शेवा रहा और अस्ल क़ुर्बानी यही है कि इन्सान किसी चीज़ के अख़्तियार करने की क़ुदरत रखने के बावजूद अख़्तियार न करे, बल्कि अज़ीमत की राह पर चले।

बिला शुब्हा आप (स0अ0) का मैदाने तिजारत में अमली उस्वा बहुत ज़रूरी था, इसलिए कि आप (स0अ0) की ज़ात तमाम इन्सानियत के लिए उस्वा थी, और इन्सानी समाज में तबाए का तनव्वो, फ़ितरत की रंगारंगी और मिज़ाजो का तलून यक़ीनी अम्र है। इसीलिए आप (स0अ0) ने ज़िन्दगी गुज़ारने का एक ऐसा नमूना अता किया, जिसमें इन्सानितय के हर तबक़े के लिए उस्वा मौजूद है। आप (स0अ0) की शख़्सित सब्र का लिबास है। सिद्क़ व यक़ीन का पैकर है। ज़हद का आला मेयार है। मुजस्सम वफ़ा है और क़ाबिले तक़लीद है।

अमरीकी पापों का नतीजा है वैश्विक आतंकवाद

जनाब संदीप तिवारी

अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा की पहल पर आतंकवादी संगठन 'आईएसआईएस' के खिलाफ शुरू किए गए अभियान से क्या दुनिया से आतंकवाद का नामोनिशान मिट जाएगा? या इसका हश्र भी अलकायदा और उसके सरगना ओसामा बिन लादेन के खात्मे के लिए अमेरिका द्वारा शुरू की गई 'आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई' जैसा ही होगा?

इन सवालों से पहले हमें सोचना होगा कि वे कौन से कारण हैं कि एक समय आतंकवाद का पर्याय कहे जाने वाले ओसामा बिन लादेन को उसकी पनाहगाह पाकिस्तान में अमेरिका द्वारा मार दिया गया, परन्तु इसके बाद ही अलकायदा से ज्यादा खूंखार आईएसआईएस के सरगना अबू बकर अल बगदादी ने खुद को इस्लामी दुनिया का ख़लीफा घोषित कर दिया?

वे कौन देश हैं जिन्होंने आईएसआईएस को पाल–पोसकर इतना खौफनाक बना दिया और क्यों?पेट्रोलियम और गैस के अकूत भंडार पर बैठे इस्लामिक देशों का इनसे क्या रिश्ता है? पूरी दुनिया को दारुल इस्लाम में बदलकर इस्लामी शरीयत लागू करने पर आमादा ऐसे आतंकवादी संगठनों और पेट्रो डॉलर के दम पर इतरा रहे खाड़ी के देशों के बीच, खुद को शांति और मानवाधिकारों का मसीहा कहने वाला अमेरिका कहां खड़ा है?

इस्लामी आतंकवाद की शुरुआत कब व कैसे हुई और किसने की, इस मुद्दे पर दुनियाभर के बुद्धिजीवी अनेक वर्षों से माथापच्ची कर रहे हैं, परंतु मामला हर बार इस्लाम की शुरुआत से लेकर इस्लाम और ईसाइयत के संघर्ष के धरातल पर आकर टिक जाता है। यह एक लम्बी और कभी खत्म न होने वाली बहस है। यहां हमारा मकसद इस बहस में उलझकर मामले को और ज्यादा पेचीदा बनाना नहीं है।

इसलिए मौजूदा खतरे को आसानी से समझे जा सकने वाले सीधे और सपाट शब्दों में प्रस्तुत करने के लिए उस दौर से शुरू करते हैं, जब अमेरिका ने 24 दिसंबर 1979 को अफगानिस्तान में सोवियत संघ के हस्तक्षेप के खिलाफ वहां, पाकिस्तान और सऊदी अरब के सहयोग से, अफगान लड़ाकों को तालिबान के नाम से खड़ा किया और नौ साल बाद फरवरी 1989 को वहां से सोवियत सेनाओं की वापसी के बाद ये लड़ाके आतंकवादियों के रूप में गिरोहबंद हो गए। यह कोई रहस्य नहीं है कि आतंकवादियों के इस गिरोह ने कैसे पाकिस्तान के सहयोग से तालिबान का रूप धारण कर 1996 में अफगानिस्तान का शासन हथिया लिया और कैसे सऊदी अरब के समर्थन और सहयोग से सऊदी नागरिक ओसामा बिन लादेन के नेतृत्व में अलकायदा पनपा और पूरी दुनिया को दारुल इस्लाम में तब्दील के नाम पर आतंक का पर्याय बन गया। इतना सब होने पर अमेरिकी नीरो की तरह चौन की बंसी बजाते रहे। लेकिन, जब अलकायदा ने 11 सितंबर, 2001 को न्यूयॉर्क के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर आतंकी हमला कर उसे तबाह कर दिया तब अमेरिका को आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई लड़ने की जरूरत महसूस हुई। इस लड़ाई में अमेरिका के यूरोपीय सहयोगियों के साथ–साथ खाड़ी के देश खासकर सऊदी अरब और पाकिस्तान भी साथ में खड़े दिखाई दिए। इस लड़ाई के नाम पर पाकिस्तान ने एक ओर तो अमेरिका से भरपूर आर्थिक मदद व फौजी साजो–सामान हासिल किया वहीं गुपचुप वह अलकायदा की मदद भी करता रहा। यहां तक कि उसने ओसामा बिन लादेन को अमेरिका की नजरों से छुपाने के लिए उसे अपने यहां पनाह भी दी। परन्तु प्रत्यक्ष रूप से पाकिस्तान हर बार यही दोहराता रहा कि उसे पता ही नहीं है कि लादेन कहां है। पाकिस्तान का यह सफेद झूठ दुनिया के सामने तब उजागर हुआ जब अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने 1 मई, 2011 को वॉशिंगटन में यह घोषणा की कि अमेरिकी सेना के एक खुफिया ऑपरेशन में ओसामा बिन लादेन को पाकिस्तान के एबटाबाद में मार दिया गया है। होना तो यह चाहिए था कि ओसामा बिन लादेन के खात्मे के साथ ही दुनिया से आतंकवाद का खात्मा हो जाना चाहिए था, परन्तु हुआ इसका ठीक उलटा।

लादेन के बाद सीरिया में आईएसआईएस के रूप में एक दूसरा व खूंखार आतंकवादी संगठन हुंकारें मार रहा है। गाजा पट्टी पर राज करता हमास, इसराइल के साथ ही अमेरिका को भी आंखें दिखाता रहा है। अब प्रश्न यह है कि जब दुनिया की सबसे बड़ी ताकत अमेरिका तालिबान, अलकायदा, हमास और आईएसआईएस को नेस्तानाबूद करना चाहता है तो वे कौन सी ताकतें हैं जो इनका और इन

जैसे दर्जनों आतंकवादी संगठनों का प्रत्यक्ष या परोक्ष समर्थन करती हैं?इसके साथ ही प्रश्न यह भी है कि जब पूरी दुनिया यह जानती है कि सऊदी अरब ने ही अलकायदा को पाला–पोसा है तब भी अमेरिका क्यों सऊदी अरब का साथ नहीं छोड़ रहा है?और क्यों आतंक के खिलाफ लड़ाई की जुगलबंदी में वह हर बार उसे अपने साथ रखता है?

अमेरिका की सऊदी अरब व आतंकवादियों से रिश्तों की कहानी छिपी नहीं है वरन इसे सभी जानते हैं?सीरिया में आईएसआईएस के आतंकवादियों को नियंत्रित करने के लिए सीरिया के विद्रोहियों को हथियार व प्रशिक्षण देने सम्बन्धी प्रस्ताव अमेरिकी कांग्रेस व सीनेट में पारित किया गया था। यह प्रस्ताव बहुत चौंकाने वाला और अंतरराष्ट्रीय मान्यताओं के विरुद्ध है। राष्ट्रपति बराक ओबामा की मार्मिक अपील पर पारित प्रस्ताव की विशेषता यह है कि इसमें सीरिया के राष्ट्रपति बशर अल–असद के वैधानिक शासन का तख्ता पलट करने की साजिश में लगे विद्रोहियों की सहायता करने की बात कही गई है परन्तु यह विद्रोही कौन हैं, उनके नाम का उल्लेख नहीं है।

सीरिया में असद विरोधी तत्व कई नामों से लड़ रहे हैं, इनमें फ्री सीरिया आर्मी, अल नुसरा फ्रंट, अलकायदा इन सीरिया, आईएसआईएल आदि कई नाम चर्चा में हैं। ये अलग–अलग हैं या जरूरत की सुविधा से नाम बदल लेते हैं इस बात को लेकर भी विश्लेषकों के कई मत हैं। होना तो यह चाहिए था कि आतंकवादियों से निपटने के लिए किसी भी देश की वैधानिक सरकार की सहायता की जाए ना कि विद्रोहियों की। इस कारण से अमेरिका को आईएसआईएस के आतंकवादियों से निपटने के लिए राष्ट्रपति बशर अल–असद की सहायता करनी चाहिए थी, लेकिन अमेरिका इसका ठीक उल्टा करता रहा है।

ओबामा प्रशासन द्वारा राष्ट्रपति असद के विरोधियों की सहायता करने का मुख्य कारण यह है कि अमेरिका असद का तख्ता पलट कराकर वहां अपने मनमाफिक सरकार स्थापित कराना चाहता है। दुनिया के विभिन्न देशों में वैधानिक सरकारों का तख्ता पलट कराकर वहां कठपुतली सरकार स्थापित कराना अमेरिका की पुरानी रणनीति है, जिसका एक लम्बा इतिहास है। वास्तव में अमेरिका आईएसआईएस के आतंकवादियों से लड़ाई की आड़ में जिन विद्रोहियों को हथियार देना चाहता है उन्हें वह पहले से ही हथियार उपलब्ध करा रहा है।

इस संबंध में वोल्टएयर नेटवर्क के लिए थैरी मेसान ने 18 अगस्त, 2014 को लिखे एक लेख 'जॉन मैककेन, कंडक्टर ऑफ अरब स्प्रिंग एंड दी कैलिफ' में न्यूज एजेंसी 'रायटर' की खबर का उल्लेख करते हुए लिखा कि किस प्रकार अमेरिकी कांग्रेस ने जनवरी 2014 में सीरिया के विद्रोहियों को सितंबर 2014 तक हथियार उपलब्ध कराने का प्रस्ताव पारित किया था। इतना ही नहीं, वास्तव में उस प्रस्ताव की अवधि समाप्त होने से पहले ही अमेरिका ने आईएसआईएस से लड़ाई के नाम पर यह प्रस्ताव पारित कराया था। अमेरिका का वास्तविक मकसद सीरिया की सत्ता से राष्ट्रपति बशर अल असद को बेदखल करना है और इस अभियान में सऊदी अरब, मिस्र, जार्डन व लेबनान के साथ ब्रिटेन, फ्रांस व ऑस्ट्रेलिया आदि देश भी शामिल हैं।

यहां इस बात का उल्लेख करना बहुत ही प्रासंगिक है कि जिस आतंकवादी गिरोह आईएसआईएस से निपटने के नाम पर अमेरिका जिन विद्रोहियों अल नुसरा फ्रंट को हथियार दे रहा है, अलकायदा मुखिया अल जवाहिरी ने अबू बकर अल बगदादी द्वारा उसी अल नुसरा फ्रंट से संबंध स्थापित करने का विरोध करते हुए फरवरी 2014 में आईएसआईएस से अपने वर्षों पुराने रिश्ते तोड़ दिए थे।

आईएसआईएस–आईएसआईएल के सऊदी अरब से संबंधों का खुलासा सऊदी अरब के सरकारी टीवी चौनल 'अल अरबिया' के 26 जनवरी 2014 के एक कार्यक्रम से होता है जिसमें आईएसआईएल का एक आतंकवादी यह कहते हुए दिखाया गया है कि वे जो कुछ करते हैं वह आईएसआईएल के शीर्ष नेतृत्व खासतौर पर प्रिंस अब्दुल रहमान अल फैसल, जो कि सऊदी अरब के मरहूम शासक फैसल के बेटे और सऊदी विदेश मंत्री प्रिंस सऊद अल फैसल के भाई हैं, के आदेश से करते हैं। बाद में इस कार्यक्रम का टेप चौनल से हटा दिया गया। कहा जा रहा है कि यह गलती से हो गया। प्रश्न यह है कि क्या यह वास्तव में गलती हुई या गलती से एक सच्चाई उजागर हो गई?

वास्तव में आईएसआईएस खाड़ी में अमेरिका के एक मोहरे की तरह काम कर रहा है। यही कारण है कि अमेरिका ने आईएसआईएस को सीरिया व इराक के एक बड़े इलाके पर कब्जा करने दिया, जहां उसने महिलाओं का अपहरण कर उन्हें 'सेक्स स्लेव' बना दिया और सामूहिक हत्याएं करते हुए अत्याचार की सभी हदें पार कर दीं। तब बराक ओबामा कहते रहे कि वे खाड़ी में हस्तक्षेप नहीं करेंगे और जब आईएसआईएस द्वारा दो अमेरिकी पत्रकारों के सिर काटे जाने के वीडियो टेप सामने आए तो अमेरिकी नागरिकों

का गुस्सा शांत करने के लिए उन्होंने आनन–फानन में आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई का ऐलान कर दिया।

अमेरिका ने ठीक ऐसा ही व्यवहार, 9 सितम्बर 2001 को वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर आतंकवादी हमले के बाद अफगानिस्तान में ओसामा बिन–लादेन और अलकायदा से निपटने के लिए किया था। यह सवाल करना गलत न होगा कि क्या अलकायदा और आईएसआईएस जैसे आतंकवादी गुट एक ही दिन में पनप जाते हैं या सुनियोजित तौर पर इन्हें पनपने के अवसर और संसाधन मुहैया कराए जाते हैं?यदि ऐसा है तो कौन हैं वे ताकतें जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मानवता के खिलाफ चल रहे इस षड्यंत्र में सहभागी हैं?और क्या आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई केवल एक दिखावा है या किसी रणनीति का हिस्सा?

यह बात जग जाहिर है कि अमेरिका ने अफगानिस्तान में सोवियत हस्तक्षेप का विरोध करने के नाम पर वहां एक लाख से ज्यादा मुजाहिदीनों की फौज तैयार की। इनमें ओसामा बिन लादेन के समर्थक भी शामिल थे। इस काम में सऊदी अरब ने अमेरिका का भरपूर सहयोग किया। मुजाहिदीनों की इस फौज में 'इस्लाम खतरे में है' के नाम पर अफगानिस्तान के अलावा पाकिस्तान, ईरान, सऊदी अरब और अलजीरिया आदि चालीस से ज्यादा मुस्लिम देशों के युवकों को इकट्ठा किया गया। इस काम में तब 40 अरब डॉलर से ज्यादा रकम खर्च की गई।

माइकेल माइरेसी ने 'दि बुश सऊदी कनेक्शन' शीर्षक लेख में लिखा है कि 80 के दशक में इसी दौरान अमेरिका ने सऊदी अरब में सैनिक हवाई अड्डे और बंदरगाह बनाए और इस काम के ठेके वहां की सबसे बड़ी कंस्ट्रक्शन कंपनी सऊदी बिन लादेन ग्रुप को दिए गए। यह ग्रुप ओसामा बिन लादेन के पिता का है। इस दौरान लादेन ने अफगानिस्तान में मुजाहिदीनों को प्रशिक्षण देने के लिए बनाई गई सुरंगों व अन्य निर्माण कार्यों के लिए अपने पिता की कम्पनी से मशीनें मंगाईं। अफगानिस्तान से सोवियत रूस की वापसी के बाद वहां वहाबी सुन्नी तालिबान मजबूत हुआ। तालिबान को सऊदी शासकों के साथ ही बिन लादेन परिवार, अल अहमदी परिवार और लादेन के भाई के साले खालिद बिन महफूज परिवार का आशीर्वाद प्राप्त था।

माइरेसी ने अपने लेख में विस्तार से लिखा है कि किस प्रकार ओसामा के भाई सलेम बिन लादेन ने बुश परिवार के घनिष्ठ मित्र जेम्स बॉथ के माध्यम से अमेरिका में अपना कारोबार फैलाया। वह वास्तव में सलेम का प्रतिनिधि था और उसने 1979 में जॉर्ज डब्ल्यू बुश के कारोबार में 50 हजार डॉलर का निवेश किया। यही नहीं, 'हाउस ऑफ बुश, हाउस ऑफ सऊद' पुस्तक के लेखक उंगेर ने इस बात का खुलासा किया है कि किस प्रकार बुश परिवार और सऊदी अरब के शाही परिवार के आर्थिक हित आपस में जुड़े थे। सऊदी परिवार ने बुश परिवार की कम्पनियों में 1.4 अरब डॉलर से ज्यादा का निवेश किया। सऊदी प्रिंस सुलतान और उनके बेटे प्रिंस बांदेर ने बुश परिवार के कार्लेल ग्रुप के माध्यम से अमेरिका के हथियार उद्योग में निवेश किया।

सऊदी परिवार और बुश परिवार के आपसी संबंधों के कारण ही अमेरिका में लादेन और अलकायदा की गतिविधियों की अनदेखी की गई। माइरेसी ने लिखा है कि 1993 में वर्ल्ड ट्रेड सेंटर में हुए कार बम विस्फोट की जांच में अलकायदा के शामिल होने के पुख्ता प्रमाण मिले थे, परन्तु प्रशासन ने इन सबकी अनदेखी करते हुए लादेन के प्रति नरम रुख अपनाया। यहां तक कि 1998 में लादेन ने जेहाद की बात करते हुए जब अमेरिकियों को मारने का फतवा जारी किया और 7 अगस्त 1998 को तंजानिया व केन्या में अमेरिकी दूतावासों पर एक साथ हुए हमलों में 266 लोग मारे तब लादेन को आतकंवादियों की सूची में शामिल तो किया गया परंतु कहीं न कहीं नरमी का रुख बना रहा।

यही कारण है कि 9/11 के हमले के बाद हुई जांच–पड़ताल में यह खुलासा हुआ कि जेद्दा स्थित अमेरिकी दूतावास के वीजा प्रमुख माइकल स्प्रिंगमैन ने जिन हजारों संदिग्ध लोगों को वीजा देने से इंकार किया उन्हें सीआईए के अधिकारियों ने वीजा देने के आदेश दिए। स्प्रिंगमैन ने इस बात की शिकायत स्टेट डिपार्टमेंट से लेकर अमेरिकी कांग्रेस की संबंधित कमेटी से भी की, परन्तु सब बेकार। स्प्रिंगमैन का मानना है कि 9/11 के हमले में जो 19 लोग शामिल थे उनमें से 15 को सीआईए के अधिकारियों के आदेश के बाद वीजा जारी किए गए थे।

कार्ल उंगेर ने 11 मार्च 2004 को बॉस्टन ग्लोब में एक लेख में लिखा कि जांच अधिकारियों को यह देखना चाहिए कि 9/11 के तत्काल बाद किसने 140 सऊदियों को 8 हवाई जहाजों से अमेरिका से बाहर जाने दिया, इनमें शाही परिवार के लोग भी शामिल थे। उंगेर ने सऊदी यात्रियों की चार सूचियां भी जारी कीं जिनमें शाही परिवार

के लोग भी शामिल हैं। 9/11 के बाद हर जांच में यह उजागर हुआ कि किस प्रकार सऊदी अरब आतंकवादियों के साथ काम करता रहा इसके बावजूद व्हाइट हाउस की नीति यह रही कि लादेन के अलावा शेष बिन लादेन परिवार संदेह से परे है।

यही नहीं ओसामा बिन लादेन को खत्म करने के लिए अमेरिका ने अफगानिस्तान में तो हस्तक्षेप किया परन्तु उस पाकिस्तान के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की जिसने उसे अपने यहां छिपाया और अन्त में अमेरिका उसे पाकिस्तान के ही छावनी क्षेत्र में मार गिराने को मजबूर हुआ।

लादेन के मारे जाने के बाद भी अलकायदा क्यों खत्म नहीं हो पाया और उसके साथ ही आईएसआईएस के नाम पर एक नया गिरोह कैसे खड़ा हो गया?इस कहानी का खुलासा होता है थैरी मेसन के लेख 'जॉन मैक्कैन कंडक्टर ऑफ अरब स्प्रिंग एंड दि कैलिफ' से जिसमें लिखा गया है कि किस प्रकार रिपब्लिकन सीनेटर जॉन मैक्कैन ने 4 फरवरी 2011 को नाटो द्वारा काहिरा में बुलाई गई उस बैठक की अध्यक्षता की थी जिसमें लेबनान और सीरिया में 'अरब स्प्रिंग' आंदोलन प्रारंभ करने का निर्णय लिया गया।

इसके बाद वे 22 फरवरी को लेबनान में आंदोलनकारियों से मिले और सीरिया की सीमा पर उन गांवों का दौरा किया जो आंदोलन का केन्द्र बने। इसके बाद मई 2013 में वे तुर्की होते हुए सीरिया के इदलिब गए जहां वे हथियारबंद विद्रोहियों से मिले। लीबिया और सीरिया के खिलाफ यह सब अमेरिका की सोची समझी रणनीति का हिस्सा था। इससे यह भी स्पष्ट है कि सितंबर 2014 के दूसरे पखवाड़े में आईएसआईएस से निपटने के नाम पर, अमेरिकी कांग्रेस और सीनेट ने, बशर अल असद के विरोधियों को हथियार देने के जो प्रस्ताव पारित किए, वास्तव में उनकी पटकथा 4 फरवरी 2011 को ही लिखी जा चुकी थी।

फ्रांस के दो खुफिया विश्लेषकों ज्यां चार्ल्स ब्रिसर्ड और जी डस्कुई ने 'फॉरबिडन ट्रुथ' में खुलासा किया कि किस प्रकार क्लिंटन और बुश प्रशासन ने तेल बाजार को स्थिर बनाए रखने और सऊदी अरब से संबंधों की खातिर अलकायदा मुखिया लादेन के खिलाफ जांच को बाधित किया।

विश्लेषकों का मानना है कि सऊदी अरब द्वारा वहाबी–सुन्नी आतंकवाद को पोषित करने की पुष्ट जानकारी होने के बावजूद अमेरिका इस ओर से आंखें बन्द किए हुए है क्योंकि सऊदी परिवार अमेरिका के हितों की रक्षा करता है। वह ओपेक के माध्यम से तेल की कीमतें नियंत्रित रखता है और कीमतें एक स्तर से अधिक नहीं होने देता, वह अमेरिकी हथियारों का प्रमुख खरीदार है तथा अमेरिका के सरकारी बांडों में निवेश करता है।

इसके साथ ही अमेरिका अलकायदा और आईएसआईएस जैसे आतंकवादी ग्रुपों का उपयोग एक हथियार के रूप में करता है। पहला किसी देश में हस्तक्षेप के लिए और दूसरा अमेरिका में यह कहने के लिए कि उसके अस्तित्व के लिए यह हस्तक्षेप जरूरी था। आतंकवादी खतरे के नाम पर अमेरिका अपने नागरिकों की निगरानी के औचित्य को भी सिद्ध करना चाहता है।

विश्लेषकों का यह भी कहना है कि अपने हथियार उद्योग को बचाए रखने के लिए दुनिया में अशांति का रहना अमेरिका के लिए बहुत जरूरी है और यही कारण है कि शांति बहाली के नाम पर दुनिया के 74 देशों में अमेरिका की सेनाएं तैनात हैं, परन्तु इसके बावजूद शांति कहीं नहीं है, बल्कि दुनिया में अशांति का महौल निरंतर गहराता ही जा रहा है।

"अरब स्प्रिंग" से मिला आतंकवाद को नया नाम रू यह प्रश्न बार–बार उठता है कि अमेरिका द्वारा संचालित आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में पाकिस्तान की धरती पर अलकायदा सरगना ओसामा बिन–लादेन का 2 मई, 2011 को काम तमाम करने के बाद दुनिया से आतंकवाद का नामोनिशान मिट जाना चाहिए था परन्तु दुर्भाग्य से ऐसा नहीं हो सका।

पिछले कुछ वर्षों में आतंकवाद आईएसआईएस, अल नुसरा फ्रंट, बोको हरम आदि कई नामों से अपने नए–नए रूप में दुनिया के सामने आया। आतंकवाद के फिर से सिर उठाने के क्या कारण हैं?

आज आईएसआईएस/आईएसआईएल के वीभत्स रूप को देखकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। आईएसआईएस और बोको हरम जैसे आतंकवादी गिरोहों द्वारा बच्चियों व महिलाओं के अपहरण और उनसे दुर्व्यवहार की खबरें रोज पढ़ने को मिलती हैं।

ये डायरेक्टिव हालांकि क्लासिफाइड डॉक्यूमेंट हैं, फिर भी विभिन्न सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार ओबामा प्रशासन मुस्लिम ब्रदरहुड के नेताओं के साथ लगातार सम्पर्क में रहा, जबकि मिस्र ने तीस साल से

इसको आतंकवादी संगठन घोषित कर रखा था। ओबामा प्रशासन ने इस संगठन को मिस्र, लीबिया और सीरिया आदि देशों में श्अरब स्प्रिंग' नाम से आंदोलन चलाने के लिए तैयार किया।

अरब स्प्रिंग आंदोलन ने पूरी दुनिया को हिलाकर रख दिया। सामान्यतः जिस आंदोलन को बदलाव के लिए जनआकांक्षाओं की अभिव्यक्ति माना जा रहा था वह वास्तव में ओबामा प्रशासन द्वारा संचालित था। इससे मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीकी देशों में व्यापक स्तर पर भू–राजनीतिक बदलाव आया। जिस आईएसआईएस को आज सीरिया और इराक में एक खतरे के रूप में देखा जा रहा है और जिसे नियंत्रित करने के लिए अमेरिका अपने सहयोगियों को साथ लेकर इससे लड़ रहा है, वह खतरा वास्तव में इसी अरब स्प्रिंग की पैदाइश है। यही नहीं, वर्षों से स्थिर रहा मिस्र आज आतंकवाद से जूझने को मजबूर हो गया है।

इस पूरे परिप्रेक्ष्य में यदि देखा जाए तो कहना न होगा कि जिस ओबामा प्रशासन ने आतंकवाद से लड़ाई के नाम पर इराक में हस्तक्षेप किया और पाकिस्तान की धरती पर ओसामा बिन लादेन का काम तमाम किया, उसी प्रशासन ने अरब स्प्रिंग के नाम पर नए सिरे से आतंकवाद को हवा दी है। यही नहीं, जिस प्रकार अमेरिका द्वारा पोषित तालिबान और अलकायदा स्वयं उसी के लिए खतरा बन गए थे उसी तरह अरब स्प्रिंग के दौरान पनपे आतंकवादी गिरोह अमेरिका के लिए खतरा बन गए हैं और उसने एक बार फिर आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई छेड़ दी है।

यहां एक बात बहुत महत्वपूर्ण है कि जिस प्रकार 2001 में लादेन के खिलाफ लड़ाई में अमेरिका को व्यापक समर्थन मिला था वैसा इस बार नहीं है। उसके कई पुराने साथी अब उसके साथ नहीं हैं। दावा किया जा रहा है कि 40 देशों का समर्थन प्राप्त हो गया है परन्तु देशों के नाम गिनने के नाम पर 10–15 देश ही दिखाई देते हैं। इनमें से भी कई देश ना–नुकूर करते दिख रहे हैं। अमेरिका का करीबी सहयोगी कतर यह लेख लिखे जाने तक साथ नहीं आया। वह अपना अलग राग अलाप रहा है। अरब स्प्रिंग से प्रभावित कई देश इस पूरे अभियान को संदेह की नजरों से देख रहे हैं। देखा जाए तो अरब स्प्रिंग से ओबामा प्रशासन की विश्वसनीयता घटी है और कुछ देशों ने आतंकवाद को लेकर अपनी पुरानी नीतियों पर पुनर्विचार शुरू कर दिया है। ऐसे देशों में सऊदी अरब प्रमुख देश कहा जा सकता है।

सऊदी अरब हालांकि स्वयं वहाबिज्म के नाम पर इस्लामी आतंकवाद का निर्यातक देश माना जाता है परन्तु उसने जिस प्रकार आतंकवाद के नाम पर कतर से अपना राजदूत वापस बुलाया वह महत्वपूर्ण बात है। हालांकि इसे दोनों देशों के आपसी हितों के टकराव से भी जोड़कर देखा जा रहा है। इसके साथ ही यह बात भी कही जा रही है कि सऊदी अरब को जिस प्रकार 2003 के बाद अलकायदा के हमलों का सामना करना पड़ा और वह भी अमेरिका द्वारा प्रेरित अरब स्प्रिंग से अछूता नहीं रहा, उन सब बातों ने उसे आतंकवाद के बारे में फिर से सोचने पर मजबूर कर दिया है।

उसके रुख में बदलाव के संदर्भ में कहा जा रहा है कि किसी सऊदी न्यायालय ने 2009 में पहली बार एक साथ 330 आतंकवादियों को सजा सुनाई। इन्हें 2003 से 2006 के दौरान सऊदी अरब में आतंकवादी हमले करने के आरोप में सजा सुनाई गई। सऊदी प्रशासन ने आतंकवाद में लिप्त लोगों को अब 20 से 30 साल की सजा देने की घोषणा की है।

कतर से संबंध बिगड़ने का कारण भी आतंकवाद ही माना जा रहा है। कतर, मुस्लिम ब्रदरहुड और अलकायदा व आईएसआईएस का समर्थन कर रहा है। इसराइल–गाजा संघर्ष में उसने हमास का साथ दिया था, जबकि सऊदी अरब उसका विरोध कर रहा था। सऊदी अरब ने मार्च 2014 में मुस्लिम ब्रदरहुड के लोगों को कतर से बाहर निकालने और अलजजीरा चौनल बंद करने के लिए कहा था। ऐसा न करने पर सऊदी अरब, बहरीन और यूएई ने कतर से अपने राजदूत वापस बुला लिए थे। उसने कतर की नाकेबंदी करने की भी धमकी दी है।

सऊदी अरब जिस तरह अलकायदा, मुस्लिम ब्रदर हुड और हमास के प्रति सख्ती दिखा रहा है और अलकायदा आतंकवादियों को दंडित कर रहा है ऐसी स्थिति में यह स्वाभाविक ही है कि अलकायदा का झुकाव भी सऊदी अरब की बजाय कतर की तरफ हो जाए तो आश्चर्य नहीं होना चाहिए। इस समय खाड़ी क्षेत्र में जिस तेजी से भू–राजनीतिक परिस्थितियां बदल रही हैं, उस स्थिति में कोई भी भविष्यवाणी करना किसी भी विश्लेषक के लिए आसान नहीं है। देखने की बात यह है कि आने वाले दिनों में ऊंट किस करवट बैठता है, इसी बात पर इस क्षेत्र की राजनीति और इसका भविष्य निर्भर करेगा।

इस्लाम के नाम से डर कैसा

साम्राज्यवादी शक्तियों ने इस्लाम को समाप्त करने तथा मुसलमानों को अपने उद्‌गम स्त्रोत से दूर करने के हर संभव प्रयास कर डाले। मासूनी, सहयूनी और कम्यूनिज़्म ने दिलों से ईमानी भावना को समाप्त करने के लिए एड़ी–चोटी का ज़ोर लगा दिया। इन संस्थाओं ने इस्लामी व प्रशिक्षणिक संस्थाओं के ख़िलाफ़ अपनी सारी ताक़त लगा दी ताकि वहां से ऐसी खेप तैयार हो जो साम्राज्यवादी स्कीमों को सफल बनाए। उन्होंने पश्चिमी विचारधारा से निकल कर आने वाले छात्रों के लिए शासन की कुर्सी तक पहुंचने की राह आसान कर दी, क्योंकि इस्लाम का उनपर इतना भय व्याप्त है जैसे किसी बादशाह अथवा शासक का। अत: वे इस्लाम की उन्नति की राह में बाधा डालते हैं ताकि यूरोपीय नेतृत्व को कोई ख़तरा न हो, इसलिए वे हर प्रकार के इस्लामी आंदोलन बल्कि हर इस्लामी प्रयास को नाकाम बनाना चाहते हैं। यहां तक कि मस्जिदों के निर्माण और नमाज़ के अदा करने पर भी पाबन्दी लगा रहे हैं। वे इन सभी कामों को अपने लिए हानिकारक समझते हैं। जैसा कि एक फ़्रांसीसी ने कहा कि:

''इस्लामी जमाअतें जिस आस्था की ओर बुलाती हैं, वह हमारी यूरोपीय सभ्यता के लिए अत्यधिक ख़तरनाक है।''

साम्राज्यवादी समझौते के मद्‌देनज़र जिस प्रकार यूरोप को इस्लाम और उसकी उन्नति का अंदेशा है। इसी प्रकार पश्चिम की गोद में पलने वाले कुछ तथाकथित मुस्लिम शासक भी इस्लामी आंदोलनों को ख़तरा समझते हैं और यह डर इस बात का नहीं है कि एक धर्म और दूसरे धर्म की तुलना में या इस्लाम ईसाईयत की तुलना में हावी हो जाएगा, क्योंकि वह भी किसी हद तक मुसलमान हैं, बल्कि उनके भय का वास्तविक राज़ यह है कि मुसलमानों की वैचारिक व सांस्कृतिक नेतृत्व का बोलबाला हो जाएगा जैसा कि इस ख़तरे को ब्राउन अपने बयान में प्रकट कर चुका है।

यही वह ख़तरा है जो साम्राज्यवादियों को इस्लामी शासन व्यवस्था व इस्लामी संस्कृति की ओर बुलाने वाले सभी आंदोलनों को समाप्त कर देने पर मजबूर किए हुए है और इसी उद्‌देश्य की प्राप्ति के लिए सभी पश्चिमी शासक तन, मन, धन की बाज़ी लगाए हुए हैं। लेकिन ख़ालिक़–ए–कायनात (सृ टा) का वादा सच है:

''एक योजना वे बना रहे हैं और एक अल्लाह बना रहा है और अल्लाह योजना बनाने वालों से बेहतर है।''

हज़रत मौलाना सैय्यद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी (रह०)

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Postal Reg. No.
RBL/NP -19

Issue: 3 - 4 | MARCH - APRIL 2019 | VOLUME: 11

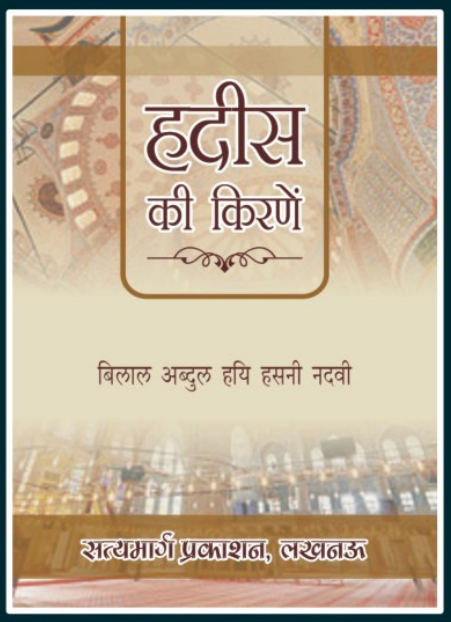

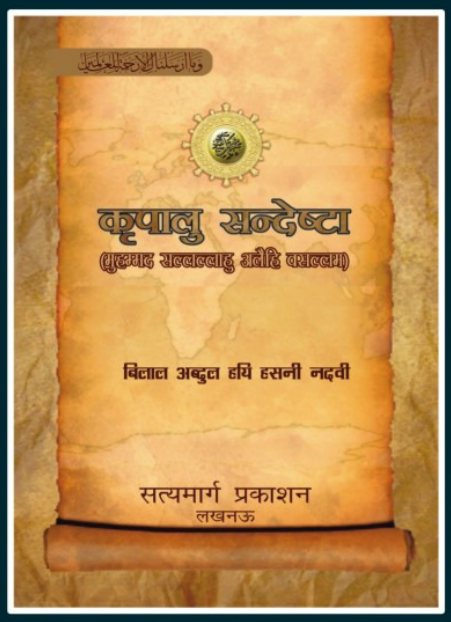

DECLARATION OF OWNERSHIP AND OTHER DETAILS
FORM 4 RULE 8

Name of Paper: Arafat Kiran
Place of Publication: Raebareli
Periodicity of Publication: Monthly
Cheif Editor: Bilal Abdul Hai Hasani
Address: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli (U.P.) 229001
Printer/Publisher: Mohammad Hasan Nadwi
Address: Maidanpur, Takiya Kalan, Raebareli (U.P.) 229001
Ownership: Markazul Imam Abil Hasan Al- Nadwi
I, Mohammad Hasan Nadwi, printer/publisher declare that the above information is correct to the best of my knowledge and belief. (March 2019)

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi
MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI
Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile:9565271812
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.